CBSE Class 12 Hindi Core Question Paper 2014 with Solution PDF-Set 2/1/3 - Compartment

Question Paper with Solutions

Conducted by the Central Board of Secondary Education (CBSE)

निर्धारित समय: 3 Hours **अधिकतम अंक: 100**

सामान्य निर्देश

(i) इस प्रश्न-पत्र में कुल 14 प्रश्न हैं। सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।
(ii) प्रश्न 4, 5, 6, 7, 8, 10, 14 में आंतरिक विकल्प दिया गया है; ऐसे प्रश्नों में केवल एक विकल्प का उत्तर दीजिए।
(iii) प्रश्नों में दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए उत्तर लिखिए।
(iv) प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दर्शाए गए हैं।

1. स्वार्थ का ज़हर
जब तक आवृत रखेगा
मानवता की आकृति को
और
स्वार्थ की नींव जब तक
जुड़ी रहेगी धन के गारे से
तब तक
आत्मसंतोष केवल
कल्पना की वस्तु होगी ।
कितने ही त्याग और
धर्म के उपदेश करें
अभावों की यह रात
सूनी-सी अन्धी रहेगी
सोचने से कार्य नहीं हो जाता
कल्पना से यथार्थ मेल नहीं खाता
आदर्श और धर्म को
काग़ज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या,
उत्तरदायित्व और संवेदनाहीन
इन थोथी डिग्रियों से
जीवन के दुख का रहस्य
सुलझ नहीं पाता ।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [5 अंक]

1(क). किन स्थितियों में आत्मसंतोष कल्पना की वस्तु होता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में आत्मसंतोष का संबंध स्वार्थ से मुक्त मानवीय आचरण से है।
- स्वार्थ और धन का गठजोड़ मानवता को ढक देता है; ऐसी दशा में संतोष केवल कल्पना बनकर रह जाता है।

चरण 1: पहली स्थिति पहचानिए कवि कहता है कि जब तक स्वार्थ का ज़हर मानवता की आकृति को ढके रहेगा, मनुष्य में दूसरों के प्रति सच्ची संवेदना विकसित नहीं होगी। केवल अपने लाभ की चिंता करने वाला व्यक्ति वास्तविक आत्मसंतोष नहीं पा सकता।

चरण 2: दूसरी स्थिति समझिए स्वार्थ की नींव जब धन के गारे से जुड़ी रहती है, तब धन का मोह स्वार्थ को और दृढ़ करता है। कवि इन दोनों स्थितियों के बने रहने तक आत्मसंतोष को कल्पना की वस्तु बताता है।

चरण 3: निष्कर्ष जब स्वार्थ मानवता को ढके रहता है और धन का मोह स्वार्थ को मज़बूत करता है, तब आत्मसंतोष केवल कल्पना की वस्तु होता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में कविता की दोनों शर्तें लिखिए: मानवता पर स्वार्थ का आवरण और धन से स्वार्थ की नींव का जुड़ना।

1(ख). 'अभावों की रातें' से कवि को क्या अभिप्रेत है ? यह रात और अधिक 'सूनी' और 'अंधी' कैसे हो जाती है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्यांश में रात अभावग्रस्त और दुखपूर्ण जीवन की प्रतीक है।
- सूनी और अंधी रात से आशा तथा सहायता से वंचित जीवन की स्थिति व्यक्त होती है।

चरण 1: रात का अर्थ स्पष्ट कीजिए अभावों की रात से कवि का अभिप्राय जीवन की आवश्यकताओं की कमी, दुख और निराशा से है। यह साधारण रात्रि का वर्णन नहीं, बल्कि अभावों में जी रहे मनुष्यों की कठिन दशा का चित्र है।

चरण 2: सूनेपन और अंधकार का कारण जोड़िए जब लोग त्याग और धर्म के उपदेश तो देते हैं, लेकिन वास्तविक सहायता तथा संवेदनापूर्ण कर्म नहीं करते, तब अभाव दूर नहीं होते। स्वार्थ और कर्महीन उपदेश इस जीवन को सहारे तथा आशा से वंचित बनाए रखते हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अभावों की रात दुख और आवश्यक साधनों की कमी वाला जीवन है। स्वार्थ, संवेदनहीनता और केवल उपदेश देने से वह और सूना तथा आशाहीन हो जाता है।

त्वरित सुझाव: प्रतीक का अर्थ बताने के बाद उसे केवल उपदेश और वास्तविक कार्य के अंतर से जोड़िए।

1(ग). आशय स्पष्ट कीजिए :
'आदर्श और धर्म को
काग़ज़ पर उतारने से फ़ायदा क्या ?' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पंक्तियों का आशय प्रसंग के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।
- कवि लिखित आदर्शों की अपेक्षा संवेदनापूर्ण व्यवहार और उत्तरदायित्व निभाने को महत्त्व देता है।

चरण 1: काग़ज़ पर उतारने का आशय समझिए आदर्श और धर्म को काग़ज़ पर उतारना उनके बारे में लिखना, सिद्धांत बनाना या उपदेश देना है। कवि ऐसे लेखन की उपयोगिता पर प्रश्न करता है जिसका जीवन के व्यवहार से कोई संबंध न हो।

चरण 2: आचरण की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए काव्यांश में कहा गया है कि सोचने से कार्य नहीं हो जाता। इसलिए आदर्श तभी सार्थक हैं जब मनुष्य उन्हें अपने आचरण में उतारकर दूसरों का दुख दूर करने का प्रयास करे। संवेदना और कर्म के बिना लिखी हुई बातें अभाव नहीं मिटातीं।

चरण 3: निष्कर्ष आदर्श और धर्म को केवल लिख देना निरर्थक है; उनकी सार्थकता उन्हें व्यवहार में उतारकर मानव-कल्याण करने में है।

त्वरित सुझाव: आशय लिखते समय लेखन को गलत न कहें; आदर्शों के केवल लेखन तक सीमित रह जाने की आलोचना स्पष्ट करें।

1(घ). 'डिग्रियाँ' क्या हैं ? उन्हें थोथी क्यों कहा गया है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डिग्रियाँ शिक्षा पूरी करने पर मिलने वाली शैक्षिक उपाधियाँ हैं।
- कवि शिक्षा की सार्थकता को संवेदना और उत्तरदायित्व से जोड़ता है।

चरण 1: डिग्रियों का सामान्य अर्थ बताइए यहाँ डिग्रियों से आशय औपचारिक पढ़ाई पूरी करने पर प्राप्त प्रमाणपत्रों अथवा शैक्षिक उपाधियों से है। वे व्यक्ति की शैक्षिक योग्यता का प्रमाण तो हैं, लेकिन केवल उनसे मानवीय गुणों की पुष्टि नहीं होती।

चरण 2: थोथी कहने का कारण स्पष्ट कीजिए कवि ने उत्तरदायित्व और संवेदना से रहित डिग्रियों को थोथी कहा है। यदि शिक्षित व्यक्ति दूसरों का दुख नहीं समझता और अपना सामाजिक दायित्व नहीं निभाता, तो उसकी उपाधि जीवन की समस्याओं को सुलझाने में उपयोगी नहीं बनती।

चरण 3: निष्कर्ष डिग्रियाँ शैक्षिक उपाधियाँ हैं। संवेदना और उत्तरदायित्व से रहित होने तथा जीवन के दुख दूर करने में सहायक न बनने के कारण उन्हें थोथी कहा गया है।

त्वरित सुझाव: डिग्री की परिभाषा के साथ कविता के दोनों निर्णायक शब्द, संवेदना और उत्तरदायित्व, अवश्य जोड़िए।

1(ङ). 'जीवन के दुख का रहस्य' कैसे सुलझ पाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता विचार, कल्पना और उपदेश की सीमाएँ बताती है।
- जीवन की कठिनाइयों को समझने और दूर करने के लिए संवेदना, उत्तरदायित्व और वास्तविक कर्म आवश्यक हैं।

चरण 1: अपर्याप्त उपाय पहचानिए कवि के अनुसार केवल सोचते रहने से कार्य नहीं होता और कल्पना अपने-आप यथार्थ नहीं बन जाती। इसी प्रकार लिखे हुए आदर्श और संवेदनाहीन डिग्रियाँ भी जीवन के दुख का रहस्य नहीं सुलझातीं।

चरण 2: सार्थक उपाय स्पष्ट कीजिए मनुष्य जब स्वार्थ से ऊपर उठकर दूसरों की पीड़ा को समझता है और अपना उत्तरदायित्व निभाते हुए सहायता करता है, तब वह दुख के कारणों तक पहुँच सकता है। आदर्शों को कर्म में बदलना ही कविता में निहित समाधान है।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन के दुख का रहस्य स्वार्थ त्यागकर, संवेदनशील बनकर और सामाजिक उत्तरदायित्व को वास्तविक कर्म में उतारकर सुलझाया जा सकता है।

त्वरित सुझाव: कविता में जिन साधनों को अपर्याप्त बताया गया है, उनके स्थान पर संवेदना और सक्रिय कर्म का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।

---

2. जिस समय लोकमान्य तिलक ने राजनीतिक क्षेत्र में क़दम रखा उस समय पूरा देश चैतन्यहीन और स्वत्वहीन हो चुका था । देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे । उनमें जीवन नहीं था, एकता नहीं थी, उनका आत्मविश्वास मर चुका था । उनके मन में यह भरा जा चुका था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य इस देश पर सदा शासन करने वाला है ।

इस परिस्थिति को बदलने की आवश्यकता तिलक ने महसूस की । उन्होंने उन्हीं असंगठित पत्तों जैसे लोगों को इकट्ठा किया और उनमें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य के लिए संकल्प जगाया । देश का बहुसंख्यक समाज परलोक को अधिक महत्त्व देता था और इस लोक के प्रति उदासीन था । इस दृष्टि को बदलकर उन्हें जीवनोन्मुख बनाया । इस कार्य के लिए उन्होंने भगवद् गीता को नया अर्थ दिया और कर्मयोग के सिद्धान्त को लोगों के सामने रखा जो राष्ट्रीय पुनर्जागरण के कार्य में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण और प्रेरणादायक सिद्ध हुआ ।

तब हालत कुछ ऐसी थी कि अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने में ही हमारे पढ़े-लिखे विचारक गौरव महसूस करते थे । भारत के बहुसंख्यक समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज, समाज-व्यवस्था – सभी उनकी दृष्टि में हेय थी । तिलक ने इस बात को समझा और अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान जगाया । इसी के साथ उन्होंने समाज के विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न हुए विरोधों को दूर कर राष्ट्रीयता की भावना को पैदा किया और राष्ट्रीयता की भावना से ही पूर्ण स्वराज्य की माँग का उदय हुआ जिसका प्रेरक वाक्य था – "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है ।"

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [15 अंक]

2(क). 'चैतन्यहीन होने' से क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए कि देश की चैतन्यहीनता का क्या कारण था । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रसंग में चैतन्यहीनता का अर्थ राष्ट्रीय चेतना, उत्साह और आत्मविश्वास का अभाव है।
- किसी स्थिति के कारण का उत्तर गद्यांश में बताए गए विश्वासों और मानसिक दशा से मिलता है।

चरण 1: प्रसंगानुसार अर्थ समझिए गद्यांश में चैतन्यहीन होने का अर्थ शारीरिक रूप से बेहोश होना नहीं है। इसका अर्थ है देशवासियों में जागरूकता, जीवन के प्रति उत्साह, संगठित होने की भावना और स्वतंत्रता पाने का आत्मविश्वास न रहना। लोग निष्क्रिय तथा निराश हो गए थे।

चरण 2: मुख्य कारण स्पष्ट कीजिए देशवासियों के मन में यह विश्वास भर दिया गया था कि अंग्रेज़ी साम्राज्य भारत पर सदा शासन करेगा। इस धारणा ने उनकी स्वतंत्र होने की आशा को कमजोर कर दिया। उनमें एकता नहीं थी और उनका आत्मविश्वास मर चुका था; इसी मानसिक पराधीनता ने राष्ट्रीय चेतना को दबा दिया।

चरण 3: निष्कर्ष चैतन्यहीनता से आशय राष्ट्रीय जागरूकता, उत्साह और आत्मविश्वास का नष्ट होना है। अंग्रेज़ी शासन को सदा बने रहने वाला मान लेने तथा एकता और आत्मविश्वास के अभाव से देश इस अवस्था में पहुँच गया था।

त्वरित सुझाव: इस प्रश्न में पहले शब्द का प्रसंगगत अर्थ लिखिए, फिर अंग्रेज़ी शासन के स्थायी होने की धारणा को कारण बताइए।

2(ख). देशवासियों की तुलना सूखे पत्तों से क्यों की गई है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा का अर्थ समझने के लिए दोनों पक्षों के समान गुण पहचाने जाते हैं।
- यहाँ सूखे पत्तों की निर्जीवता और बिखराव देशवासियों की निष्क्रियता तथा असंगठन से जुड़े हैं।

चरण 1: सूखे पत्तों के गुण पहचानिए सूखे पत्तों में हरियाली और जीवन का अभाव होता है। जंगल में गिरे पत्ते बिखरे पड़े रहते हैं और उनका अपना कोई संगठित स्वरूप नहीं होता। लेखक ने इन्हीं गुणों को देशवासियों की स्थिति स्पष्ट करने के लिए लिया है।

चरण 2: देशवासियों की दशा से तुलना कीजिए गद्यांश के अनुसार देश के करोड़ों लोग अस्त-व्यस्त थे। उनमें एकता नहीं थी, उनका आत्मविश्वास मर चुका था और अंग्रेज़ी शासन को स्थायी मान लेने से उनमें स्वतंत्रता के लिए सक्रिय होने का उत्साह नहीं था। इसीलिए वे सूखे पत्तों की तरह बिखरे, असंगठित और चेतनाहीन दिखाई देते थे।

चरण 3: निष्कर्ष देशवासी सूखे पत्तों के समान अस्त-व्यस्त और असंगठित थे। उनमें उत्साह, एकता और आत्मविश्वास का अभाव था; इसलिए उनकी तुलना सूखे पत्तों से की गई है।

त्वरित सुझाव: तुलना का उत्तर दो समानताओं पर टिकाइए: पत्तों का बिखराव और निर्जीवता, लोगों का असंगठन और उत्साहहीनता।

2(ग). 'उस परिस्थिति' में तिलक ने कौन-सा महत्त्वपूर्ण कार्य किया ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उस परिस्थिति का संकेत देशवासियों की असंगठित और आत्मविश्वासहीन दशा की ओर है।
- गद्यांश में तिलक का प्रमुख कार्य लोगों को संगठित कर स्वतंत्रता का संकल्प जगाना है।

चरण 1: परिस्थिति पहचानिए तिलक के राजनीतिक क्षेत्र में आने पर देशवासी बिखरे हुए सूखे पत्तों के समान थे। उनमें एकता और आत्मविश्वास नहीं था तथा वे अंग्रेज़ी शासन को स्थायी मान चुके थे।

चरण 2: तिलक का कार्य बताइए तिलक ने इन असंगठित लोगों को इकट्ठा किया। उन्होंने उनमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता के लिए संकल्प जगाया और निष्क्रियता से निकालकर सक्रिय राष्ट्रीय जीवन की ओर प्रेरित किया।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने असंगठित देशवासियों को एकत्र करके उनमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करने का दृढ़ संकल्प जगाया।

त्वरित सुझाव: उस परिस्थिति को पहले अनुच्छेद से पहचानें और महत्त्वपूर्ण कार्य का उत्तर अगले अनुच्छेद की आरंभिक पंक्तियों से दें।

2(घ). देश के पढ़े-लिखे विचारकों की क्या सोच थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में विचारकों की सोच का वर्णन भारतीय और पाश्चात्य समाज के प्रति उनके भिन्न दृष्टिकोण से हुआ है।
- उत्तर में अपने समाज की निंदा तथा पाश्चात्य समाज के गुणगान, दोनों पक्ष स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: भारतीय समाज के प्रति सोच बताइए पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज के दोष दिखाने में गौरव अनुभव करते थे। भारतीय समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और सामाजिक व्यवस्था उनकी दृष्टि में हेय अर्थात तुच्छ थीं। वे अपने समाज की अच्छाइयों के प्रति सम्मान का भाव नहीं रखते थे।

चरण 2: पाश्चात्य समाज के प्रति सोच बताइए इसके विपरीत वे पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने को गर्व की बात मानते थे। गद्यांश में इस प्रवृत्ति को अपने समाज के प्रति हीनता और पश्चिम के प्रति अत्यधिक प्रशंसा के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इसी सोच को तिलक ने स्वाभिमान जगाकर बदलने का प्रयास किया।

चरण 3: निष्कर्ष पढ़े-लिखे विचारक भारतीय धर्म, रीति-रिवाज और समाज-व्यवस्था को हेय मानकर उनके दोष दिखाते थे, जबकि पाश्चात्य समाज, जीवन, विचार और कृतित्व का गुणगान करने में गौरव महसूस करते थे।

त्वरित सुझाव: उत्तर में दृष्टिकोण के दोनों पक्ष अलग रखें: भारतीय समाज को हेय मानना और पाश्चात्य समाज की प्रशंसा करना।

2(ङ). तिलक ने किस आधार पर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन किया ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यहाँ उनके दृष्टिकोण का संबंध अपने समाज को हेय मानने वाली सोच से है।
- तिलक ने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाकर हीनता की भावना को बदला।

चरण 1: बदलने योग्य दृष्टिकोण पहचानिए लोग अपने समाज की धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और व्यवस्था को हेय समझने लगे थे। पढ़े-लिखे विचारक भी अपने समाज के दोष और पाश्चात्य समाज के गुण देखते थे।

चरण 2: परिवर्तन का आधार स्पष्ट कीजिए तिलक ने अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान जगाया। अपने अतीत और सामाजिक पहचान के प्रति सम्मान उत्पन्न करके उन्होंने हीनता की भावना के स्थान पर स्वाभिमान का आधार दिया।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान तथा स्वाभिमान जगाकर उनके दृष्टिकोण में परिवर्तन किया।

त्वरित सुझाव: इस उत्तर को गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद से जोड़ें; समाज, धर्म और इतिहास, तीनों आधार स्पष्ट लिखें।

2(च). तिलक ने देशवासियों में अपने समाज और धर्म के प्रति अभिमान जगाना आवश्यक क्यों समझा ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कारण पूछे जाने पर उत्तर गद्यांश में बताई गई परिस्थिति से निकालते हैं।
- तिलक का उद्देश्य अपने समाज के प्रति हीनता दूर करके आत्मगौरव जगाना था।

चरण 1: तत्कालीन दृष्टिकोण पहचानिए पढ़े-लिखे विचारक अपने समाज के दोष दिखाने और पाश्चात्य जीवन का गुणगान करने में गौरव अनुभव करते थे। उन्हें भारतीय धर्म-प्रणाली, रीति-रिवाज और समाज-व्यवस्था हेय लगते थे।

चरण 2: आवश्यकता का संबंध समझिए ऐसी दृष्टि देशवासियों का आत्मविश्वास कमजोर करती थी। तिलक ने अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति अभिमान जगाकर उन्हें इस हीनभावना से उबारना और राष्ट्रीय जागरण के लिए तैयार करना आवश्यक समझा।

चरण 3: निष्कर्ष देशवासी अपने समाज और धर्म को हीन समझने लगे थे; उनका आत्मविश्वास तथा राष्ट्रीय स्वाभिमान लौटाने के लिए तिलक ने उनमें अभिमान जगाना आवश्यक समझा।

त्वरित सुझाव: कारण लिखते समय पाश्चात्य गुणगान और भारतीय समाज के प्रति हीनभावना का उल्लेख साथ करें।

2(छ). सामाजिक सौहार्द के लिए तिलक का क्या योगदान था ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक सौहार्द का अर्थ समाज के विभिन्न समूहों में मेल-जोल और एकता है।
- योगदान का उत्तर गद्यांश में बताए गए कार्य और उसके प्रभाव को जोड़कर देते हैं।

चरण 1: तिलक का कार्य खोजिए गद्यांश के अंतिम अनुच्छेद में बताया गया है कि तिलक ने समाज के विभिन्न गुटों के मध्य उत्पन्न विरोधों को दूर किया। उनका प्रयास बिखरे लोगों को एक साझा राष्ट्रीय उद्देश्य से जोड़ना था।

चरण 2: सौहार्द पर प्रभाव समझिए गुटों का विरोध कम होने से समाज में एकता का आधार बना। तिलक ने उनमें राष्ट्रीयता की भावना पैदा की, जिससे लोग अपने पारस्परिक मतभेदों से ऊपर उठकर देश के लिए संगठित हो सके।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक ने समाज के विभिन्न गुटों के आपसी विरोध दूर करके उनमें एकता और राष्ट्रीयता की भावना जगाई; यही सामाजिक सौहार्द के लिए उनका योगदान था।

त्वरित सुझाव: सौहार्द के उत्तर में गुटों के विरोध दूर करना और राष्ट्रीय एकता जगाना मुख्य बिंदु रखें।

2(ज). तिलक की राष्ट्रीयता की भावना किस रूप में प्रतिफलित हुई ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- प्रतिफलित होने का अर्थ किसी भावना का ठोस परिणाम के रूप में सामने आना है।
- गद्यांश राष्ट्रीय एकता, स्वतंत्रता के संकल्प और पूर्ण स्वराज्य की माँग का संबंध स्पष्ट करता है।

चरण 1: राष्ट्रीय चेतना का विकास समझिए तिलक ने असंगठित देशवासियों को एकत्र करके उनमें राष्ट्रीय स्वतंत्रता का संकल्प जगाया। उन्होंने अपने समाज, धर्म और इतिहास के प्रति लोगों का अभिमान बढ़ाया तथा विभिन्न गुटों के विरोधों को दूर किया। इससे देशवासियों में साझा राष्ट्रीयता की भावना विकसित हुई।

चरण 2: भावना का राजनीतिक परिणाम पहचानिए गद्यांश के अंतिम वाक्य में राष्ट्रीयता की भावना को पूर्ण स्वराज्य की माँग का आधार बताया गया है। इस माँग का प्रेरक वाक्य था, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इस प्रकार राष्ट्रीयता केवल मन की भावना नहीं रही, बल्कि स्वतंत्रता प्राप्त करने की स्पष्ट माँग के रूप में प्रकट हुई।

चरण 3: निष्कर्ष तिलक की राष्ट्रीयता की भावना पूर्ण स्वराज्य की माँग के रूप में प्रतिफलित हुई। इसका प्रेरक वाक्य था, "स्वतंत्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

त्वरित सुझाव: प्रतिफल पूछे जाने पर अंतिम अनुच्छेद से पूर्ण स्वराज्य की माँग और उसका प्रेरक वाक्य लिखें।

2(झ). गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक दीजिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक संक्षिप्त होना चाहिए और पूरे गद्यांश के केंद्रीय भाव को व्यक्त करना चाहिए।
- इस गद्यांश का केंद्र तिलक द्वारा देशवासियों में आत्मगौरव और राष्ट्रीय चेतना जगाना है।

चरण 1: केंद्रीय विषय पहचानिए गद्यांश के आरंभ में देशवासियों की निष्क्रियता और बिखराव बताया गया है। आगे तिलक द्वारा उन्हें संगठित करने, कर्मयोग की प्रेरणा देने और अपने समाज के प्रति अभिमान जगाने का वर्णन है।

चरण 2: पूरे कथ्य को समेटिए गद्यांश का अंतिम भाग राष्ट्रीयता से पूर्ण स्वराज्य की माँग उत्पन्न होने की बात कहता है। इसलिए केवल गीता या सामाजिक दोषों का नाम देने के बजाय तिलक और राष्ट्रीय जागरण को साथ रखने वाला शीर्षक पूरे कथ्य का प्रतिनिधित्व करता है।

चरण 3: निष्कर्ष उपयुक्त शीर्षक है : "लोकमान्य तिलक और राष्ट्रीय जागरण।

त्वरित सुझाव: शीर्षक में मुख्य व्यक्तित्व तिलक तथा उनके कार्य का केंद्रीय लक्ष्य राष्ट्रीय जागरण दोनों रखें।

2(ञ). उपसर्ग और प्रत्यय अलग कीजिए :

संकल्प, स्वातंत्र्य । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपसर्ग मूल शब्द के पहले तथा प्रत्यय उसके बाद जुड़कर नया शब्द बनाते हैं।
- शब्द-रचना पहचानते समय संधि या स्वर-परिवर्तन के कारण बदले हुए रूप का भी ध्यान रखते हैं।

चरण 1: संकल्प में उपसर्ग अलग कीजिए संकल्प का विभाजन सम् + कल्प है। यहाँ सम् उपसर्ग है। सम् के म् का अनुस्वार के रूप में लेखन होने से संकल्प लिखा जाता है; इसलिए केवल सं को देखकर मूल उपसर्ग की पहचान नहीं छोड़नी चाहिए।

चरण 2: स्वातंत्र्य में प्रत्यय अलग कीजिए स्वातंत्र्य का विभाजन स्वतंत्र + य है। यहाँ य भाववाचक संज्ञा बनाने वाला प्रत्यय है। शब्द बनते समय आरंभिक स्वर में वृद्धि होती है, जिससे स्वतंत्र से स्वातंत्र्य रूप बनता है।

चरण 3: निष्कर्ष संकल्प : सम् उपसर्ग, कल्प मूल शब्द। स्वातंत्र्य : स्वतंत्र मूल शब्द, य प्रत्यय।

त्वरित सुझाव: संकल्प में आरंभ का सम् और स्वातंत्र्य में अंत का य पहचानें; स्वर-परिवर्तन को नया उपसर्ग न मानें।

2(ट). मिश्रवाक्य में बदलिए :

'देश के करोड़ों निवासी जंगल के सूखे पत्तों की तरह अस्त-व्यस्त थे ।' [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- मिश्रवाक्य में एक प्रधान उपवाक्य और उसके अधीन आश्रित उपवाक्य होता है।
- रूपांतरण में मूल वाक्य का अर्थ और काल सुरक्षित रखते हुए पदबंध को उपवाक्य में बदलते हैं।

चरण 1: तुलना वाला पदबंध पहचानिए मूल वाक्य में देश के करोड़ों निवासियों की अस्त-व्यस्त दशा की तुलना जंगल के सूखे पत्तों से की गई है। जंगल के सूखे पत्तों की तरह पदबंध में अलग क्रिया नहीं है, इसलिए यह अपने आप में उपवाक्य नहीं है।

चरण 2: तुलना को आश्रित उपवाक्य बनाइए तुलना के लिए जैसे और वैसे का प्रयोग करके सूखे पत्तों वाले भाग में होते हैं क्रिया जोड़ते हैं। देशवासियों वाला भाग प्रधान रहता है और उसमें थे को बनाए रखते हैं। इससे मूल तुलना सुरक्षित रहते हुए आश्रित उपवाक्य बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष मिश्रवाक्य : "जैसे जंगल के सूखे पत्ते अस्त-व्यस्त होते हैं, वैसे ही देश के करोड़ों निवासी अस्त-व्यस्त थे।

त्वरित सुझाव: की तरह वाले तुलना-पदबंध को जैसे वाले उपवाक्य में बदलें और उसमें उचित क्रिया अवश्य जोड़ें।

3(क). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

बढ़ती जनसंख्या और उसके दुष्परिणाम [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और सार्थक उपसंहार होना चाहिए।
- जनसंख्या के दुष्परिणाम समझाते समय संसाधनों, रोजगार, सेवाओं और पर्यावरण पर पड़ने वाले दबाव को उदाहरणों से स्पष्ट करें।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय कीजिए शीर्षक के बाद भूमिका में जनसंख्या और विकास का संबंध रखें। मुख्य भाग में वृद्धि के

कारण तथा भोजन, आवास, रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव समझाएँ। अंत में शिक्षा, जागरूकता और स्वैच्छिक परिवार-नियोजन जैसे उपाय रखें। प्रश्न में शब्द-सीमा नहीं दी गई है; इसलिए विषय के सभी पक्षों का संतुलित विवेचन करें।

चरण 2: पूर्ण नमूना निबंध लिखिए **बढ़ती जनसंख्या और उसके दुष्परिणाम**

मानव किसी देश की सबसे बड़ी शक्ति है। शिक्षित, स्वस्थ और कुशल नागरिक राष्ट्र के विकास में योगदान देते हैं। किंतु जब जनसंख्या की वृद्धि के अनुपात में संसाधनों, रोजगार और सार्वजनिक सुविधाओं का विस्तार नहीं होता, तब यही वृद्धि गंभीर समस्या बन जाती है। इसलिए जनसंख्या का प्रश्न संख्या के साथ जीवन की गुणवत्ता से भी जुड़ा है।

अशिक्षा, कम उम्र में विवाह, परिवार-नियोजन संबंधी जानकारी का अभाव तथा पुत्र की चाह जैसी धारणाएँ जनसंख्या वृद्धि को बढ़ावा दे सकती हैं। चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार से मृत्यु-दर में कमी एक सकारात्मक उपलब्धि है, लेकिन उसके साथ शिक्षा और परिवार के आकार के प्रति जागरूकता भी आवश्यक है।

बढ़ती जनसंख्या का पहला प्रभाव मूलभूत आवश्यकताओं पर पड़ता है। भोजन, स्वच्छ पानी, कपड़े और आवास की माँग बढ़ती जाती है। सीमित आय वाले परिवारों के लिए बच्चों को पौष्टिक भोजन, अच्छी शिक्षा और उचित स्वास्थ्य-सेवा देना कठिन हो जाता है। विद्यालयों और अस्पतालों पर दबाव बढ़ने से सेवाओं की गुणवत्ता प्रभावित होती है।

रोजगार के अवसर पर्याप्त न बढ़ें तो बेरोजगारी और आर्थिक असुरक्षा फैलती है। काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन बढ़ता है। इससे यातायात, आवास और सफाई की व्यवस्था पर बोझ पड़ता है तथा झुग्गी बस्तियों का विस्तार हो सकता है।

पर्यावरण भी इस दबाव से अछूता नहीं रहता। आवास और अन्य आवश्यकताओं के लिए वनों तथा कृषि-भूमि का उपयोग बढ़ता है। पानी और ऊर्जा की अधिक खपत, कचरे की मात्रा और प्रदूषण प्रकृति का संतुलन बिगाड़ते हैं। इनके दुष्परिणाम आने वाली पीढ़ियों को भी झेलने पड़ सकते हैं।

इस समस्या का समाधान भय या दबाव नहीं, बल्कि शिक्षा और जागरूकता है। विशेषकर बालिकाओं की शिक्षा, महिलाओं को निर्णय का अधिकार, उचित आयु में विवाह और स्वैच्छिक परिवार-नियोजन की सुविधाएँ आवश्यक हैं। साथ ही सरकार को रोजगार, स्वास्थ्य और शिक्षा की व्यवस्था मजबूत करनी चाहिए। परिवार, समाज और सरकार के साझा प्रयासों से ही जनसंख्या तथा संसाधनों में संतुलन बनेगा और प्रत्येक नागरिक को सम्मानपूर्ण जीवन मिल सकेगा।

चरण 3: निष्कर्ष प्रस्तुत निबंध जनसंख्या वृद्धि के कारण, सामाजिक-आर्थिक एवं पर्यावरणीय दुष्परिणाम और व्यावहारिक उपायों को क्रमबद्ध रूप से स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: कारण, दुष्परिणाम और उपाय के क्रम में लिखें; आँकड़े देने की अपेक्षा स्पष्ट संबंध और ठोस उदाहरण रखें।

3(ख). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

इंटरनेट का संसार [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध में भूमिका, विषय का क्रमबद्ध विस्तार और उपसंहार होते हैं। इंटरनेट के संसार का वर्णन करते समय उसके उपयोग और चुनौतियों दोनों पर विचार करना चाहिए।
- विषय से जुड़े परिचित उदाहरण विचारों को स्पष्ट करते हैं। भाषा सरल, प्रवाहपूर्ण तथा अनुच्छेदों के बीच विचारों का संबंध स्वाभाविक होना चाहिए।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा बनाइए भूमिका में इंटरनेट को विश्वव्यापी संचार और सूचना का माध्यम बताइए। फिर शिक्षा, संवाद, व्यापार और सेवाओं में उसके उपयोग समझाइए। अगले अनुच्छेद में गलत सूचना, निजता और समय के दुरुपयोग की समस्याएँ रखिए। अंत में विवेकपूर्ण उपयोग का संदेश दीजिए। यह विचारात्मक निबंध है, इसलिए पत्र जैसा पता या संबोधन आवश्यक नहीं है।

चरण 2: पूर्ण नमूना निबंध लिखिए **इंटरनेट का संसार**

इंटरनेट ने मनुष्य के सामने ज्ञान और संवाद का विशाल संसार खोल दिया है। विभिन्न स्थानों पर स्थित कम्प्यूटरों को जोड़ने वाला यह

माध्यम दूरियों को कम करता है। अब किसी सूचना को खोजने अथवा दूर बैठे परिचित तक संदेश पहुँचाने के लिए लंबी प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती।

शिक्षा के क्षेत्र में इंटरनेट की उपयोगिता विशेष रूप से दिखाई देती है। विद्यार्थी पुस्तकों, लेखों और शिक्षण सामग्री का अध्ययन कर सकते हैं। कठिन विषयों को समझने के लिए अतिरिक्त उदाहरण मिल जाते हैं। शिक्षक भी अपने अध्यापन को अधिक रोचक बनाने के लिए विविध सामग्री प्राप्त कर सकते हैं। हालांकि सामग्री की विश्वसनीयता जाँचना आवश्यक है।

इंटरनेट ने कामकाज और दैनिक जीवन को भी सुविधाजनक बनाया है। ईमेल द्वारा पत्राचार, रेल टिकट का आरक्षण, बैंकिंग और खरीदारी जैसे कार्य घर बैठे किए जा सकते हैं। व्यापारी अपने उत्पादों की जानकारी दूर तक पहुँचा सकते हैं। समाचार, संगीत और अन्य मनोरंजन सामग्री भी सहज उपलब्ध होती है।

इस संसार की कुछ चुनौतियाँ भी हैं। गलत सूचना तेजी से फैल सकती है और अनजान व्यक्तियों को निजी जानकारी देना हानिकारक हो सकता है। लगातार इंटरनेट में व्यस्त रहने से पढ़ाई, स्वास्थ्य तथा परिवार के लिए समय घटता है। इसकी सुविधाएँ उन लोगों तक समान रूप से नहीं पहुँचतीं जिनके पास उपकरण, प्रशिक्षण या संपर्क की सुविधा नहीं है।

इसलिए इंटरनेट का उपयोग विवेक और अनुशासन के साथ करना चाहिए। विश्वसनीय स्रोत चुनना, निजी जानकारी सुरक्षित रखना और उपयोग का समय निर्धारित करना आवश्यक है। तकनीक तभी सार्थक है जब वह हमारी समझ बढ़ाए और जीवन को बेहतर बनाए। इंटरनेट का संसार संभावनाओं से भरा है; उसे उपयोगी बनाना हमारी जिम्मेदारी है।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध इंटरनेट के लाभ, उसकी चुनौतियों और जिम्मेदार उपयोग को क्रमबद्ध ढंग से प्रस्तुत करता है। उसका केंद्रीय विचार है कि इंटरनेट की उपयोगिता विवेकपूर्ण व्यवहार से बढ़ती है।

त्वरित सुझाव: इस विषय की रूपरेखा में शिक्षा, दैनिक सेवाएँ, जोखिम और जिम्मेदार उपयोग लिख लें; प्रत्येक बिंदु को अलग अनुच्छेद में विकसित करें।

3(ग). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

कम्प्यूटर की उपयोगिता [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- विचारात्मक निबंध विषय का परिचय देकर उसके प्रमुख पक्षों को उदाहरण सहित स्पष्ट करता है। कम्प्यूटर की उपयोगिता समझाने के लिए उसकी कार्यक्षमता को शिक्षा, चिकित्सा और दैनिक कामकाज से जोड़ना उपयोगी है।
- संतुलित विवेचन में सुविधा के साथ सीमाओं का भी उल्लेख होता है। भूमिका, विषय-विस्तार और उपसंहार में विचारों का क्रम बना रहना चाहिए।

चरण 1: प्रारूप और विषय-विस्तार तय कीजिए शीर्षक के बाद कम्प्यूटर का संक्षिप्त परिचय दीजिए। मुख्य भाग में तेज गणना, सूचना-संग्रह, शिक्षा, चिकित्सा, कार्यालय और अनुसंधान के उपयोग समझाइए। फिर सही निर्देश, प्रशिक्षण और संतुलित उपयोग की आवश्यकता बताइए। उपसंहार में मानव बुद्धि तथा तकनीक के सहयोग पर जोर दीजिए। विषय को केवल इंटरनेट के उपयोगों तक सीमित न रखें।

चरण 2: पूर्ण नमूना निबंध लिखिए **कम्प्यूटर की उपयोगिता**

आधुनिक जीवन में कम्प्यूटर एक अत्यंत उपयोगी साधन बन गया है। यह दिए गए निर्देशों के अनुसार आँकड़ों का संसाधन करता है, गणनाएँ करता है और सूचना सुरक्षित रखता है। इसकी गति और संग्रह-क्षमता ने अनेक कठिन तथा समय लेने वाले कार्य सरल बना दिए हैं।

शिक्षा में कम्प्यूटर का विशेष महत्त्व है। विद्यार्थी लेख तैयार कर सकते हैं, चित्र बना सकते हैं और शिक्षण सामग्री के माध्यम से कठिन विषय समझ सकते हैं। विद्यालयों में परीक्षा-परिणाम, पुस्तकालय और विद्यार्थियों के अभिलेख व्यवस्थित रखने में भी इसका उपयोग होता है। इंटरनेट से जुड़ने पर अध्ययन सामग्री तक पहुँच और व्यापक हो जाती है।

कार्यालयों और व्यापारिक संस्थानों में कम्प्यूटर काम की गति बढ़ाता है। पत्र तैयार करना, हिसाब रखना, कर्मचारियों का वेतन निकालना और वस्तुओं का विवरण सुरक्षित रखना इसके द्वारा सरल होता है। बैंकिंग तथा आरक्षण व्यवस्था में बड़ी मात्रा में सूचनाओं का प्रबंधन किया जाता है। इससे समय और श्रम की बचत होती है।

चिकित्सा में रोगियों के अभिलेख सुरक्षित रखने और अनेक जाँचों के परिणामों का विश्लेषण करने में कम्प्यूटर सहायता देता है। वैज्ञानिक शोध, मौसम संबंधी आँकड़ों के अध्ययन और इंजीनियरिंग के नक्शे बनाने में भी इसका महत्त्व है। कला और मनोरंजन के क्षेत्र में चित्र-संपादन, संगीत तथा चलचित्र निर्माण ने इसके उपयोग को और बढ़ाया है।

फिर भी कम्प्यूटर मानव विवेक का विकल्प नहीं है। गलत आँकड़े या निर्देश देने पर परिणाम भी गलत हो सकते हैं। लंबे समय तक लगातार स्क्रीन देखने से स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए प्रशिक्षण, सही जानकारी, नियमित विश्राम और आँकड़ों की सुरक्षा आवश्यक है।

कम्प्यूटर की वास्तविक उपयोगिता उसके समझदारी भरे इस्तेमाल में है। जब मनुष्य अपनी रचनात्मकता और विवेक को उसकी कार्यक्षमता से जोड़ता है, तब यह शिक्षा, उत्पादन और जनसेवा का सशक्त साधन बन जाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इस निबंध में कम्प्यूटर की कार्यक्षमता को विभिन्न क्षेत्रों के उदाहरणों से स्पष्ट किया गया है। सही निर्देश, प्रशिक्षण और विवेकपूर्ण उपयोग उसकी उपयोगिता को सार्थक बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: कम्प्यूटर पर लिखते समय गणना, सूचना-संग्रह और दस्तावेज तैयार करने के उदाहरण अवश्य दें; सभी अनुच्छेदों को केवल इंटरनेट तक सीमित न करें।

3(घ). निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर निबंध लिखिए :

महानगरों में असुरक्षित नारी [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक विषय के निबंध में समस्या का स्वरूप, उसके कारण, प्रभाव और व्यावहारिक समाधान क्रम से प्रस्तुत किए जाते हैं। नारी-सुरक्षा का प्रश्न समान अवसर और सम्मानपूर्ण जीवन से जुड़ा है।
- भाषा संवेदनशील और तर्कपूर्ण होनी चाहिए। समस्या का विवेचन करते समय पीड़िता को दोष देने या अप्रमाणित आँकड़ों का प्रयोग करने से बचना चाहिए।

चरण 1: निबंध की रूपरेखा निर्धारित कीजिए भूमिका में महानगरों के अवसरों के साथ सुरक्षा की चुनौती रखिए। फिर सार्वजनिक स्थानों, आवागमन और कार्यस्थलों पर असुरक्षा के रूप समझाइए। कारणों में असमान मानसिकता, उदासीनता और व्यवस्था की कमियाँ शामिल कीजिए। समाधान में सुरक्षित परिवहन, उत्तरदायी प्रशासन, संवेदनशील समाज तथा समानता की शिक्षा पर विचार कीजिए। अंत में स्वतंत्र और सम्मानपूर्ण जीवन का संदेश रखिए।

चरण 2: पूर्ण नमूना निबंध लिखिए **महानगरों में असुरक्षित नारी**

महानगर शिक्षा, रोजगार और आत्मनिर्भरता के अनेक अवसर प्रदान करते हैं। यहाँ महिलाएँ विभिन्न क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय दे रही हैं। फिर भी घर से बाहर निकलते समय सुरक्षा की चिंता उनके उत्साह और स्वतंत्रता को प्रभावित करती है। यह स्थिति किसी भी सभ्य समाज के लिए गंभीर प्रश्न है।

भीड़भरे परिवहन, सुनसान रास्तों और कार्यस्थलों पर महिलाओं को कभी अभद्र टिप्पणियों, कभी उत्पीड़न और हिंसा का सामना करना पड़ता है। ऐसी घटनाओं का भय उनके समय, आवागमन और अवसरों के चयन को सीमित कर सकता है। घटना के बाद पीड़िता पर ही प्रश्न उठाना उसकी कठिनाई और बढ़ाता है।

असुरक्षा के पीछे केवल बड़े शहरों की भीड़ नहीं, बल्कि स्त्री को बराबर सम्मान न देने वाली मानसिकता भी है। राहगीरों की उदासीनता, अपर्याप्त प्रकाश व्यवस्था, असुरक्षित परिवहन और शिकायतों के प्रति असंवेदनशील व्यवहार समस्या को गंभीर बनाते हैं। महिलाओं के वस्त्रों या बाहर निकलने के समय को दोष देना अपराधी की जिम्मेदारी से ध्यान हटाता है।

समाधान के लिए प्रशासन और समाज दोनों को सक्रिय होना होगा। सार्वजनिक स्थानों पर पर्याप्त प्रकाश, भरोसेमंद परिवहन तथा सहायता की सुलभ व्यवस्था आवश्यक है। शिकायतों पर संवेदनशील और समयबद्ध कार्रवाई होनी चाहिए। कार्यस्थलों पर सुरक्षित वातावरण और शिकायत करने वाली महिला के प्रति सहयोगपूर्ण व्यवहार सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

परिवार और विद्यालय बच्चों को समानता, सहमति तथा परस्पर सम्मान सिखाएँ। नागरिक उत्पीड़न देखकर चुप रहने के बजाय सुरक्षित ढंग से सहायता करें। महिलाओं को आत्मविश्वास और अधिकारों की जानकारी देना उपयोगी है, लेकिन सुरक्षा का पूरा भार उन्हीं पर डालना अनुचित है।

महानगर की प्रगति केवल ऊँची इमारतों से नहीं आँकी जा सकती। उसकी वास्तविक पहचान तब बनेगी जब प्रत्येक महिला निर्भय होकर पढ़ सके, काम कर सके और सार्वजनिक जीवन में भाग ले सके। नारी की सुरक्षा और गरिमा सुनिश्चित करना पूरे समाज का साझा दायित्व है।

चरण 3: निष्कर्ष निबंध नारी की असुरक्षा को सामाजिक मानसिकता और सार्वजनिक व्यवस्था से जुड़ी समस्या के रूप में प्रस्तुत करता है। इसका समाधान समानता की शिक्षा, उत्तरदायी व्यवस्था और नागरिक सहयोग में है।

त्वरित सुझाव: इस सामाजिक विषय को समस्या, कारण, प्रभाव और समाधान के क्रम में लिखें; उपाय बताते समय प्रशासन और समाज दोनों की जिम्मेदारी स्पष्ट करें।

4. 'मतदाता पहचान-पत्र' बनवाने की सभी औपचारिकताओं को पूरा करने के चार माह के उपरान्त भी आपकी नई बस्ती के निवासी उसे प्राप्त नहीं कर पाए हैं । इस समस्या के निदान के लिए अपने क्षेत्र के चुनाव-अधिकारी को एक पत्र लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समस्या-निवारण के लिए लिखे जाने वाले औपचारिक पत्र में प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद और पता, विषय, संबोधन, मूल कथ्य तथा समापन होते हैं।
- शिकायत तथ्यपरक और भाषा विनम्र होनी चाहिए। इस पत्र के मुख्य तथ्य सभी औपचारिकताओं का पूरा होना, चार माह का विलंब और पूरी बस्ती के निवासियों को पहचान-पत्र न मिलना हैं।

चरण 1: पत्र का प्रारूप तय कीजिए पत्र अपने क्षेत्र के चुनाव-अधिकारी को संबोधित होगा। विषय में मतदाता पहचान-पत्र उपलब्ध कराने का अनुरोध लिखेंगे। प्रेषक नई बस्ती का एक निवासी होगा, जो अन्य निवासियों की समस्या भी अधिकारी तक पहुँचाएगा। अंत में धन्यवाद, औपचारिक समापन और नाम देंगे। नीचे उदाहरण के लिए प्रेषक का नाम और पता दिया गया है।

चरण 2: समस्या और अपेक्षित कार्रवाई की रूपरेखा बनाइए आरंभ में सभी औपचारिकताएँ पूरी होने और चार माह बीतने का उल्लेख करेंगे। फिर पहचान-पत्र न मिलने से हुई परेशानी बताएँगे। समाधान के रूप में आवेदनों की स्थिति की जाँच, विलंब के कारणों का पता लगाने और पहचान-पत्रों के शीघ्र वितरण का आग्रह करेंगे। आरोप लगाने के स्थान पर अधिकारी से स्पष्ट कार्रवाई और सूचना देने की अपेक्षा रखेंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखिए 24, नई बस्ती
जयपुर
दिनांक: 16 जुलाई, 2014
सेवा में,
क्षेत्रीय चुनाव-अधिकारी
निर्वाचन कार्यालय, जयपुर
विषय: मतदाता पहचान-पत्र शीघ्र उपलब्ध कराने के संबंध में।
महोदय,
सविनय निवेदन है कि हमारी नई बस्ती के निवासियों ने मतदाता पहचान-पत्र बनवाने के लिए निर्धारित आवेदन-पत्र और आवश्यक

दस्तावेज जमा करके सभी औपचारिकताएँ चार माह पूर्व पूरी कर दी थीं। इसके बावजूद हमें अभी तक अपने मतदाता पहचान-पत्र प्राप्त नहीं हुए हैं। इस विलंब से सभी आवेदक परेशान हैं और उन्हें अपने आवेदनों की स्थिति की जानकारी भी नहीं मिल पा रही है।

आपसे अनुरोध है कि संबंधित कर्मचारियों से हमारे आवेदनों की जाँच कराकर विलंब के कारणों का पता लगाएँ तथा पहचान-पत्र शीघ्र तैयार कराकर उनके वितरण की व्यवस्था करें। बस्ती में वितरण की तिथि और स्थान की सूचना दे दी जाए तो निवासियों को सुविधा होगी। यदि किसी आवेदन में कोई कमी हो, तो संबंधित आवेदक को उसकी जानकारी दी जाए, ताकि वह उसे तुरंत पूरा कर सके।

आशा है कि आप हमारी समस्या पर शीघ्र ध्यान देकर उचित कार्रवाई करेंगे।

धन्यवाद।

भवदीय

अरुण कुमार

नई बस्ती के निवासियों की ओर से

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में चार माह से लंबित समस्या, पूरी हो चुकी औपचारिकताएँ और जाँच कराकर शीघ्र पहचान-पत्र वितरण का अनुरोध स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है।

त्वरित सुझाव: शिकायत-पत्र में समस्या, उसकी अवधि और अधिकारी से अपेक्षित कार्रवाई स्पष्ट लिखें; इस प्रश्न में 'चार माह' और 'सभी औपचारिकताएँ' अवश्य आएँ।

अथवा

4. आपके गाँव/नगर में पेय जल एवं बिजली की व्यवस्था करने के लिए आभार ज्ञापित करते हुए स्थानीय विधायक को एक पत्र लिखिए।

[5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जनप्रतिनिधि को लिखा गया आभार-पत्र औपचारिक होता है। उसमें प्रेषक का पता, दिनांक, प्राप्तकर्ता का पद-पता, विषय, संबोधन, धन्यवाद का कारण और समापन दिए जाते हैं।
- आभार का आधार किए गए कार्य और उससे जनता को मिली सुविधा होनी चाहिए। यहाँ पेयजल और बिजली की व्यवस्था, दोनों के लिए धन्यवाद देना आवश्यक है।

चरण 1: पत्र का उद्देश्य और प्रारूप तय कीजिए पत्र स्थानीय विधायक को नगर या गाँव के निवासियों की ओर से लिखा जाएगा। विषय में पेयजल एवं बिजली की व्यवस्था के लिए आभार व्यक्त करेंगे। भाषा विनम्र, आत्मीय और औपचारिक रखेंगे। व्यक्तिगत प्रशंसा बढ़ाने के स्थान पर जनहित में हुए कार्य का उल्लेख करेंगे। उदाहरण के लिए नीचे प्रेषक का नाम और एक गाँव का पता लिया गया है।

चरण 2: धन्यवाद के कारणों को व्यवस्थित कीजिए पहले दोनों सुविधाएँ उपलब्ध होने की बात लिखेंगे। फिर पेयजल से स्वच्छ पानी की उपलब्धता तथा बिजली से पढ़ाई और दैनिक कामकाज में सुविधा के बारे में बताएँगे। अंत में निवासियों की ओर से धन्यवाद देंगे और सुविधाओं के उचित उपयोग तथा रखरखाव में सहयोग का आश्वासन देंगे। पत्र का केंद्र आभार ही रहेगा; इसे नई माँगों की सूची में नहीं बदलेंगे।

चरण 3: पूरा आदर्श पत्र लिखिए ग्राम रामपुर

जिला जयपुर

दिनांक: 16 जुलाई, 2014

सेवा में,

माननीय विधायक महोदय

स्थानीय विधानसभा क्षेत्र, जयपुर

विषय: गाँव में पेयजल एवं बिजली की व्यवस्था के लिए आभार।

महोदय,

हमारे गाँव में पेयजल और बिजली की व्यवस्था कराने के लिए समस्त ग्रामवासियों की ओर से आपका हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ। आपके प्रयासों से मिली इन आवश्यक सुविधाओं से लोगों को बड़ी राहत मिली है और गाँव के दैनिक जीवन में सुखद परिवर्तन आया है।

स्वच्छ पेयजल उपलब्ध होने से परिवारों को पीने का पानी जुटाने में सुविधा हुई है। लोगों का समय और श्रम बच रहा है तथा स्वास्थ्य की रक्षा में भी सहायता मिल रही है। बिजली की व्यवस्था होने से बच्चों को शाम के समय पढ़ाई करने में सुविधा हुई है। घरेलू कामकाज और छोटे व्यवसायों को भी इससे लाभ मिल रहा है। ये दोनों सुविधाएँ गाँव के विकास और लोगों के जीवन-स्तर में सुधार के लिए बहुत उपयोगी हैं।

जनहित की इन आवश्यकताओं पर ध्यान देने और इनके समाधान के लिए हम आपके प्रति कृतज्ञ हैं। ग्रामवासी जल और बिजली का विवेकपूर्ण उपयोग करेंगे तथा इन व्यवस्थाओं के रखरखाव में संबंधित कर्मचारियों को पूरा सहयोग देंगे। आशा है कि गाँव के विकास के प्रति आपका सहयोग आगे भी मिलता रहेगा।

पुनः सादर धन्यवाद।

भवदीय

मोहन कुमार

समस्त ग्रामवासियों की ओर से

चरण 4: निष्कर्ष पत्र में पेयजल तथा बिजली, दोनों व्यवस्थाओं के लिए धन्यवाद, उनसे प्राप्त जनसुविधाएँ और ग्रामवासियों के सहयोग की भावना व्यक्त की गई है।

त्वरित सुझाव: आभार-पत्र में किए गए कार्य का नाम और उसका ठोस लाभ लिखें; यहाँ पानी और बिजली में से किसी एक का उल्लेख छूटना नहीं चाहिए।

5(क)(i). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

पीत पत्रकारिता किसे कहते हैं ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पत्रकारिता का उद्देश्य तथ्यपरक सूचना देना है; पीत पत्रकारिता में इस उद्देश्य के स्थान पर सनसनी और पाठकों को आकर्षित करना प्रमुख हो जाता है।
- अफवाह, बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुति और उत्तेजक समाचार इसके प्रमुख लक्षण हैं।

चरण 1: उद्देश्य पहचानिए समाचार-पत्र की बिक्री या लोकप्रियता बढ़ाने के लिए सनसनीखेज खबरों को प्रमुखता देना पीत पत्रकारिता की प्रवृत्ति है। इसमें पाठक की जिज्ञासा भड़काने पर अधिक ध्यान रहता है।

चरण 2: प्रस्तुति का स्वरूप समझिए इस प्रकार की पत्रकारिता में तथ्यों की जाँच और जनहित की उपेक्षा करके अफवाहों, आरोपों तथा घटनाओं को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत किया जाता है। केवल किसी गंभीर अपराध की तथ्यपरक खबर देना अपने-आप में पीत पत्रकारिता नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष बिक्री और लोकप्रियता बढ़ाने के लिए अफवाहों तथा सनसनीखेज खबरों को बढ़ा-चढ़ाकर प्रस्तुत करने वाली गैर-जिम्मेदार पत्रकारिता को पीत पत्रकारिता कहते हैं।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में 'सनसनी फैलाना', 'तथ्यों की उपेक्षा' और 'बिक्री बढ़ाना' जोड़ें; केवल समाचार का विषय बताना पर्याप्त नहीं है।

5(क)(ii). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

इंटरनेट-पत्रकारिता की लोकप्रियता के कोई दो कारण बताइए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इंटरनेट पत्रकारिता में समाचार डिजिटल माध्यम से पाठक तक पहुँचते हैं और उन्हें लगातार अद्यतन किया जा सकता है।
- इसकी लोकप्रियता समझाते समय पाठक को मिलने वाली दो अलग सुविधाएँ बतानी चाहिए।

चरण 1: तात्कालिकता का लाभ बताइए समाचार तेजी से उपलब्ध हो जाते हैं और नई जानकारी आने पर उन्हें तुरंत अद्यतन किया जा सकता है। पाठक को अगली मुद्रित प्रति की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती; इसलिए वह घटनाओं की नवीनतम जानकारी प्राप्त कर सकता है।

चरण 2: सुविधाजनक पहुँच का लाभ बताइए इंटरनेट की सुविधा होने पर पाठक अपनी सुविधानुसार किसी भी समय और स्थान से समाचार पढ़ सकता है। उसे किसी निश्चित प्रसारण समय या समाचार-पत्र के वितरण पर निर्भर नहीं रहना पड़ता। यह लचीलापन इसके उपयोग को लोकप्रिय बनाता है।

चरण 3: निष्कर्ष इंटरनेट पत्रकारिता की लोकप्रियता के दो कारण हैं: समाचारों का तत्काल और निरंतर अद्यतन होना तथा इंटरनेट उपलब्ध होने पर किसी भी समय और स्थान से उन्हें पढ़ सकना।

त्वरित सुझाव: दो कारण माँगे जाएँ तो 'तुरंत अद्यतन समाचार' और 'समय-स्थान की सुविधा' अलग लिखें; एक ही बात दो तरह से न दोहराएँ।

5(क)(iii). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

समाचार-पत्रों की भाषा की दो विशेषताएँ लिखिए । [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार-पत्रों की भाषा का उद्देश्य विविध पाठकों तक सूचना सहज रूप से पहुँचाना है।
- इसके लिए सरलता और स्पष्टता आवश्यक हैं; कठिन शब्द और उलझे हुए वाक्य समाचार को समझने में बाधा डालते हैं।

चरण 1: सरलता की विशेषता समझाइए समाचार-पत्रों में प्रचलित और सहज शब्दों का प्रयोग होता है, ताकि सामान्य पाठक भी समाचार समझ सके। अनावश्यक कठिन शब्दों और अत्यधिक साहित्यिक अलंकरण से बचा जाता है। भाषा पाठक के रोजमर्रा के व्यवहार के निकट रहती है।

चरण 2: स्पष्टता की विशेषता समझाइए समाचार की बात छोटे, सीधे और स्पष्ट वाक्यों में कही जाती है। कौन-सी घटना कहाँ हुई और उसका आशय क्या है, यह पढ़ते ही समझ में आना चाहिए। अस्पष्ट संदर्भों और दो अर्थ देने वाले वाक्यों से बचना स्पष्टता के लिए आवश्यक है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार-पत्रों की भाषा की दो विशेषताएँ हैं: सरल और प्रचलित शब्दावली तथा स्पष्ट, सीधे और आसानी से समझ में आने वाले वाक्य।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषताएँ पूछे जाने पर 'सरलता' और 'स्पष्टता' लिखकर उनका छोटा अर्थ दें; मुद्रण या वितरण की विशेषताएँ न लिखें।

5(क)(iv). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

उलटा पिरामिड शैली क्या है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समाचार में तथ्यों का क्रम उनके महत्त्व के अनुसार तय किया जाता है।
- उलटा पिरामिड शैली में सबसे महत्त्वपूर्ण सूचना आरंभ में और कम महत्त्वपूर्ण विवरण बाद में आते हैं।

चरण 1: सूचनाओं का क्रम समझिए इस शैली में समाचार का मुख्य तथ्य या सार पहले अनुच्छेद, अर्थात् मुखड़े में दिया जाता है। इसके बाद उससे जुड़े विवरण घटते हुए महत्त्व के क्रम में रखे जाते हैं। इसलिए पाठक को समाचार का केंद्रीय तथ्य आरंभ में ही मिल जाता है।

चरण 2: शैली का उद्देश्य पहचानिए समाचार के अंतिम हिस्से में अपेक्षाकृत कम आवश्यक विवरण होते हैं। स्थान कम होने पर इन्हें हटाने से मुख्य सूचना सुरक्षित रहती है। घटनाओं का समयानुसार क्रम देना इस शैली की अनिवार्यता नहीं है; सूचना का महत्त्व इसका आधार है।

चरण 3: निष्कर्ष समाचार लेखन की वह शैली, जिसमें सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले और अन्य तथ्य घटते महत्त्व के क्रम में बाद में दिए जाते हैं, उलटा पिरामिड शैली कहलाती है।

त्वरित सुझाव: परिभाषा में 'सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य पहले' और 'घटते महत्त्व का क्रम' अवश्य लिखिए।

5(क)(v). निम्नलिखित के संक्षेप में उत्तर दीजिए :

सम्पादकीय किसे कहा जाता है ? [1 अंक]

हल:

अवधारणा:

- संपादकीय किसी महत्त्वपूर्ण विषय पर समाचार-पत्र का अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।
- इसमें घटना की सूचना के साथ उसका विवेचन और तर्कपूर्ण मत होता है।

चरण 1: संपादकीय की विशेषता समझिए समाचार-पत्र किसी समसामयिक घटना, समस्या या मुद्दे का विश्लेषण करते हुए उस पर अपनी राय प्रस्तुत करता है। इस प्रकार के विचारप्रधान लेख को संपादकीय कहते हैं। यह केवल घटना का विवरण नहीं, बल्कि उसके अर्थ और प्रभावों का विवेचन भी करता है।

चरण 2: संस्थागत मत पहचानिए संपादकीय में व्यक्त मत समाचार-पत्र की नीति और दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करता है। इसे संपादक या संपादकीय मंडल का सदस्य लिख सकता है और सामान्यतः इसके साथ लेखक का व्यक्तिगत नाम नहीं दिया जाता। अतः यह किसी स्वतंत्र लेखक के निजी विचार वाले लेख से भिन्न होता है।

चरण 3: निष्कर्ष किसी महत्त्वपूर्ण समसामयिक विषय पर समाचार-पत्र की नीति, विचार या दृष्टिकोण व्यक्त करने वाला विश्लेषणात्मक लेख संपादकीय कहलाता है।

त्वरित सुझाव: संपादकीय की पहचान बताते समय 'समाचार-पत्र का दृष्टिकोण' लिखिए; इसे केवल संपादक की व्यक्तिगत राय न कहिए।

5(ख). 'आधुनिक जीवन-शैली और बढ़ती आवश्यकताएँ' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का क्रमबद्ध विवेचन किया जाता है; भूमिका, मुख्य विचार और सार्थक निष्कर्ष इसके अंग हैं।
- आधुनिक सुविधाओं की उपयोगिता स्वीकार करते हुए आवश्यकता और दिखावे में अंतर करना इस विषय का केंद्रीय विचार है।

चरण 1: प्रारूप और विषय-योजना बनाइए विषयानुकूल शीर्षक और लेखक का नाम दीजिए। भूमिका में बदलती जीवन-शैली का परिचय, मुख्य भाग में बढ़ती आवश्यकताओं के कारण और प्रभाव तथा अंतिम भाग में संतुलित उपभोग के उपाय रखिए। विज्ञापन, प्रतिस्पर्धा और तकनीक के उदाहरणों से विवेचन स्पष्ट होगा।

चरण 2: पूरा आलेख लिखिए **आधुनिक जीवन-शैली और बढ़ती आवश्यकताएँ**

लेखक: एक विद्यार्थी

विज्ञान और तकनीक ने हमारे जीवन को अनेक सुविधाएँ दी हैं। संचार, यातायात, चिकित्सा और शिक्षा के क्षेत्र में हुए परिवर्तन हमारे दैनिक अनुभवों का हिस्सा हैं। इनके साथ हमारी आवश्यकताओं का दायरा भी लगातार बढ़ रहा है। कल तक विलासिता समझी जाने वाली कई वस्तुएँ आज सामान्य जीवन की आवश्यकता बन गई हैं।

इस बदलाव का एक पक्ष उपयोगी है। विद्यार्थी को अध्ययन के लिए पुस्तकें और कंप्यूटर चाहिए, तो कामकाजी व्यक्ति को समय बचाने वाले साधनों की जरूरत पड़ती है। किंतु सुविधा की चाह जब प्रदर्शन और अंधी प्रतिस्पर्धा बन जाती है, तब समस्या शुरू होती है। विज्ञापन हमें बार-बार विश्वास दिलाते हैं कि नया उत्पाद खरीदे बिना हम पीछे रह जाएँगे। दूसरों की जीवन-शैली की नकल करते हुए लोग अपनी आय और वास्तविक जरूरतों को भूल जाते हैं।

अनावश्यक खरीदारी घरेलू बजट बिगाड़ती है। ऋण का दबाव बढ़ता है और अधिक कमाने की दौड़ में परिवार, विश्राम तथा स्वास्थ्य के लिए समय घट जाता है। उपयोग योग्य वस्तुओं को जल्दी त्यागने से कचरा बढ़ता है और प्राकृतिक संसाधनों पर भी बोझ पड़ता है। इस प्रकार बढ़ती इच्छाओं का प्रभाव व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता।

समाधान आधुनिक सुविधाओं का त्याग नहीं, उनका विवेकपूर्ण उपयोग है। खरीदने से पहले वस्तु की जरूरत, उपयोगिता और टिकाऊपन पर विचार करना चाहिए। बजट, बचत, मरम्मत और पुनः उपयोग की आदतें अपनानी होंगी। वास्तविक समृद्धि वस्तुओं के ढेर में नहीं, स्वस्थ जीवन, संतोष और अच्छे संबंधों में है। आधुनिकता तभी सार्थक है, जब सुविधा के साथ संयम भी बना रहे।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख आधुनिक सुविधाओं की उपयोगिता, बढ़ती इच्छाओं के कारण और उनके दुष्प्रभाव स्पष्ट करते हुए विवेकपूर्ण उपभोग का संदेश देता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में तकनीक की आलोचना भर न करें; जरूरत और दिखावे का अंतर बताकर बजट, टिकाऊ वस्तुओं और पुनः उपयोग जैसे उपाय जोड़ें।

अथवा

5(ख). 'धन कमाने के नए तौर-तरीक़े' विषय पर एक आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आलेख में विषय का परिचय, उदाहरणों सहित विश्लेषण और निष्कर्ष क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं।
- बदलती तकनीक और बाजार से रोजगार के नए अवसर मिलते हैं; उनकी सफलता के लिए कौशल, परिश्रम और ईमानदारी आवश्यक हैं।

चरण 1: प्रारूप और विचारों का क्रम तय कीजिए शीर्षक और लेखक-परिचय के बाद भूमिका में आजीविका के बदलते स्वरूप की चर्चा कीजिए। मुख्य भाग में इंटरनेट, स्वतंत्र सेवाओं और छोटे उद्यमों के उदाहरण दीजिए। अवसरों के साथ चुनौतियाँ बताकर अंत में ईमानदार तथा टिकाऊ आय का पक्ष रखिए।

चरण 2: पूरा आलेख प्रस्तुत कीजिए **धन कमाने के नए तौर-तरीक़े**

लेखक: एक विद्यार्थी

कभी आजीविका के साधनों की चर्चा खेती, व्यापार और सरकारी नौकरी तक सीमित दिखाई देती थी। आज शिक्षा, तकनीक और संचार के विस्तार ने कमाई के नए रास्ते खोल दिए हैं। व्यक्ति अपने ज्ञान, हुनर और रचनात्मकता को सेवा या उत्पाद का रूप देकर आय अर्जित कर सकता है।

इंटरनेट ने छोटे व्यवसायों को दूर बैठे ग्राहकों तक पहुँचने का अवसर दिया है। हस्तशिल्प, कपड़े और घरेलू उत्पाद बेचने वाले अपने सामान की जानकारी ऑनलाइन दे सकते हैं। लेखन, अनुवाद, वेबसाइट निर्माण और डिजाइन जैसे काम स्वतंत्र रूप से किए जा सकते हैं। विषय का अच्छा ज्ञान रखने वाले विद्यार्थी पढ़ाकर आय अर्जित कर सकते हैं। खानपान, मरम्मत, पर्यटन और स्थानीय आवश्यकताओं से जुड़ी सेवाएँ भी स्वरोजगार के रास्ते खोलती हैं।

इन तरीकों की विशेषता यह है कि कई काम छोटे स्तर पर आरंभ किए जा सकते हैं। घर से काम करने का अवसर महिलाओं और अन्य इच्छुक लोगों के लिए उपयोगी हो सकता है। परंतु केवल साधन उपलब्ध होना सफलता की गारंटी नहीं है। काम की गुणवत्ता, समय पर सेवा, ग्राहक का विश्वास और लगातार सीखने की इच्छा आवश्यक हैं। अनियमित आय तथा बाजार की प्रतिस्पर्धा के लिए भी तैयार रहना पड़ता है।

नए अवसरों के साथ धोखे का खतरा भी रहता है। बिना मेहनत तुरंत बहुत पैसा मिलने के प्रलोभन से बचना चाहिए। किसी काम को शुरू करने से पहले उसकी विश्वसनीयता, लागत और माँग समझना जरूरी है। धन कमाने का श्रेष्ठ तरीका वही है जो व्यक्ति की क्षमता विकसित करे और समाज की किसी जरूरत को पूरा करे। तकनीक को ईमानदारी तथा परिश्रम से जोड़कर ही नई संभावनाओं को टिकाऊ आजीविका बनाया जा सकता है।

चरण 3: निष्कर्ष आलेख नए रोजगारों के ठोस उदाहरण देता है और उनकी उपयोगिता के साथ कौशल, विश्वसनीयता तथा परिश्रम की आवश्यकता स्पष्ट करता है।

त्वरित सुझाव: केवल कमाई के साधन गिनाने के बजाय प्रत्येक समूह की उपयोगिता बताइए और त्वरित धन के प्रलोभन से बचने का तर्क जोड़िए।

---

6. 'कामकाजी नारी की समस्याएँ' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- फ़ीचर किसी सामाजिक विषय को मानवीय अनुभव, दृश्यात्मक शुरुआत और संवेदनशील भाषा के माध्यम से प्रस्तुत करता है। इसमें आकर्षक शीर्षक तथा विषय के विविध पक्षों का क्रमबद्ध विवेचन होता है।
- इस विषय में कामकाजी महिला के घर और कार्यस्थल के दोहरे दायित्व, सुरक्षा, अवसरों की समानता तथा पारिवारिक सहयोग को केंद्र में रखना चाहिए। किसी काल्पनिक आँकड़े या व्यक्ति के कथन को प्रमाण की तरह प्रस्तुत नहीं करना चाहिए।

चरण 1: रूपरेखा और प्रस्तुति तय कीजिए शुरुआत सुबह से रात तक चलने वाली दिनचर्या के एक सामान्य दृश्य से की जा सकती है। उसके बाद घरेलू काम के असमान बँटवारे, आने-जाने की कठिनाई, कार्यस्थल की अपेक्षाओं तथा बच्चों की देखभाल के प्रश्न उठाएँ। अंत में परिवार और संस्थानों के सहयोग से समाधान की दिशा दिखाएँ। फ़ीचर में समस्या का वर्णन मानवीय हो और महिला की उपलब्धियों तथा स्वतंत्र पहचान का सम्मान भी बना रहे।

चरण 2: पूरा फ़ीचर लिखिए **दो मोर्चों पर हर दिन: कामकाजी नारी की चुनौतियाँ**

लेखिका: अंजलि

सुबह की चाय चढ़ी है, बच्चे का टिफ़िन तैयार होना है और दफ़्तर पहुँचने का समय भी निकला जा रहा है। ऐसी सुबह कई कामकाजी महिलाओं के लिए रोज़ की कहानी है। दफ़्तर से लौटने पर भी उनके काम की घड़ी अक्सर बंद नहीं होती। बाहर की नौकरी के साथ घर की अधिकांश जिम्मेदारियाँ भी उन्हीं के हिस्से में आ जाती हैं।

शिक्षा और रोजगार ने महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाया है। वे परिवार की आर्थिक शक्ति बनने के साथ अपनी प्रतिभा की पहचान भी

बना रही हैं। फिर भी घरेलू श्रम को केवल स्त्री का कर्तव्य मानने वाली सोच उनकी राह कठिन करती है। बच्चों और बुज़ुर्गों की देखभाल, भोजन और घर की व्यवस्था के बीच अपने आराम तथा स्वास्थ्य के लिए समय निकालना चुनौती बन जाता है।

कार्यस्थल पर उनकी योग्यता का निष्पक्ष मूल्यांकन होना चाहिए, लेकिन पूर्वाग्रह और असमान अवसर बाधा बन सकते हैं। असुरक्षित यातायात, देर तक काम करने की अपेक्षा और उत्पीड़न का भय भी चिंता बढ़ाते हैं। मातृत्व या पारिवारिक दायित्व को उनकी कार्यक्षमता पर संदेह करने का आधार नहीं बनाया जाना चाहिए।

समाधान केवल महिला से अधिक कुशल बनने की अपेक्षा करना नहीं है। परिवार में घरेलू काम का न्यायपूर्ण बँटवारा हो। संस्थाएँ सुरक्षित वातावरण, शिकायत सुनने की विश्वसनीय व्यवस्था, बच्चों की देखभाल की सुविधा और जरूरत के अनुसार काम के समय में लचीलापन दें।

कामकाजी नारी को सहानुभूति भर नहीं, बराबरी और सहयोग चाहिए। जब घर और कार्यस्थल दोनों उसकी जिम्मेदारियों को समझेंगे, तभी उसकी उपलब्धियों के पीछे छिपी थकान कम होगी और उसकी प्रतिभा को खुलकर आगे बढ़ने का अवसर मिलेगा।

चरण 3: निष्कर्ष यह फ़ीचर जीवंत आरंभ से कामकाजी महिला की दोहरी जिम्मेदारियों तक पहुँचता है और परिवार तथा कार्यस्थल के साझा सहयोग को समाधान के रूप में प्रस्तुत करता है।

त्वरित सुझाव: इस विषय में केवल समस्याएँ गिनाने के बजाय एक दैनिक दृश्य से आरंभ करें और प्रत्येक बड़ी चुनौती के साथ सहयोग की ठोस दिशा दिखाएँ।

अथवा

6. 'शिक्षित समाज में बढ़ती तलाक की घटनाएँ' विषय पर एक फ़ीचर का आलेख लिखिए । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- सामाजिक फ़ीचर में आकर्षक शीर्षक, जीवन से जुड़ा आरंभ, समस्या के विविध पक्ष और विचारपूर्ण अंत होता है। किसी घटना को समझाते समय एकतरफा दोषारोपण से बचना चाहिए।
- इस विषय में शिक्षा और संवेदनशीलता का अंतर, संवाद की कमी, बदलती अपेक्षाएँ तथा सम्मान और समानता की आवश्यकता प्रमुख पक्ष हैं। तलाक के कारण सभी परिवारों में समान नहीं होते।

चरण 1: विषय का संतुलित ढाँचा तैयार कीजिए आरंभ में यह प्रश्न उठाएँ कि शैक्षिक उपलब्धियाँ होने पर भी रिश्ते कठिन क्यों हो सकते हैं। फिर समय के अभाव, अहं, पारिवारिक हस्तक्षेप और असमान भूमिकाओं की चर्चा करें। किसी एक लिंग या केवल शिक्षा को दोष न दें। अंत में संवाद और सहयोग का महत्त्व बताएँ; साथ ही हिंसा या अपमान सहकर संबंध बनाए रखने को समाधान न मानें। बिना प्रमाण के प्रतिशत, सर्वेक्षण या विशेषज्ञ का कथन न जोड़ें।

चरण 2: पूरा फ़ीचर लिखिए **डिग्रियों के बीच रिश्तों की परीक्षा**

लेखक: आदित्य

घर की दीवार पर डिग्रियाँ सजी हैं, लेकिन खाने की मेज़ पर बातचीत गायब है। यह दृश्य एक सवाल उठाता है: क्या अच्छी शिक्षा अपने आप अच्छा वैवाहिक संबंध भी सुनिश्चित करती है? शिक्षित परिवारों में टूटते रिश्तों की चर्चा हमें विवाह की बदलती अपेक्षाओं और उसकी चुनौतियों पर सोचने को विवश करती है।

शिक्षा व्यक्ति को अधिकारों, स्वतंत्रता और आत्मसम्मान के प्रति सजग बनाती है। आज पति-पत्नी दोनों संबंध में सम्मान और बराबरी की अपेक्षा रखते हैं। परंतु जहाँ निर्णय लेने का अधिकार एक के पास हो और दूसरे से केवल समर्पण की आशा की जाए, वहाँ तनाव पनप सकता है। आर्थिक आत्मनिर्भरता किसी व्यक्ति को अपमानजनक संबंध से बाहर निकलने का साहस भी दे सकती है।

दूसरी ओर व्यस्त दिनचर्या, साथ बिताने के लिए समय की कमी, अनकही शिकायतें और परिवार का अनावश्यक हस्तक्षेप मतभेद बढ़ा सकते हैं। समस्या तब गहरी होती है जब बातचीत की जगह आरोप ले लेते हैं और अपनी बात मनवाना एक-दूसरे को समझने से अधिक जरूरी हो जाता है। शिक्षा तभी संबंध में सहायक होती है, जब उसके साथ संवेदनशीलता और सुनने का धैर्य भी हो।

रिश्तों को स्वस्थ बनाने के लिए जिम्मेदारियों का समान बँटवारा, आर्थिक विषयों पर स्पष्टता और व्यक्तिगत इच्छाओं का सम्मान आवश्यक

है। जिन मतभेदों को सुलझाना संभव हो, उनमें दोनों की सहमति से परामर्श मददगार हो सकता है। लेकिन हिंसा, भय या लगातार अपमान को सहते रहना रिश्ते की सफलता नहीं है।

हर तलाक के पीछे अलग कहानी होती है। इसलिए टूटते विवाहों को केवल आधुनिकता या किसी एक पक्ष का दोष कहना अनुचित होगा। शिक्षित समाज की पहचान तभी सार्थक है जब वह सुरक्षित, सम्मानपूर्ण संबंधों का समर्थन करे और अलग होने वाले व्यक्तियों की गरिमा भी बनाए रखे।

चरण 3: निष्कर्ष फ़ीचर शिक्षा को दोष देने के बजाय संबंधों में संवाद, समानता और संवेदनशीलता की आवश्यकता समझाता है। उसका समापन विवाह के साथ व्यक्ति की सुरक्षा तथा गरिमा को भी महत्त्व देता है।

त्वरित सुझाव: तलाक जैसे संवेदनशील विषय पर कारणों के कई पक्ष दिखाएँ; अप्रमाणित आँकड़ों और स्त्री या पुरुष पर एकतरफा आरोप से बचें।

---

7. मैं और, और जग और, कहाँ का नाता,
मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता;
जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव,
मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता ।
मैं निज रोदन में राग लिए फिरता हूँ,
शीतल वाणी में आग लिए फिरता हूँ,
हों जिस पर भूपों के प्रासाद निछावर,
मैं वह खंडहर का भाग लिए फिरता हूँ ।
निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

7(क). संसार के साथ कवि का किस प्रकार का नाता है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में कवि अपने भाव-जगत और संसार की भौतिक दृष्टि के अंतर को स्पष्ट करता है। उत्तर में संबंध का स्वरूप और उसका कारण दोनों बताने हैं।
- 'मैं और, और जग और, कहाँ का नाता' में कवि और संसार की भिन्नता व्यक्त हुई है; आगे की पंक्तियाँ इस भिन्नता का कारण समझाती हैं।

चरण 1: संबंध का स्वरूप पहचानिए कवि का सांसारिक मूल्यों से मेल नहीं है। उसका मन भावनाओं, प्रेम और अपने कल्पना-जगत में रमने वाला है, जबकि संसार की दृष्टि अलग है। इसलिए वह 'कहाँ का नाता' कहकर संसार से अपने वैचारिक और भावनात्मक अलगाव को प्रकट करता है। इसका आशय संसार में उसका कोई परिचित न होना नहीं, बल्कि उसकी जीवन-दृष्टि का सामान्य सांसारिक दृष्टि से भिन्न होना है।

चरण 2: भिन्नता का कारण स्पष्ट कीजिए संसार भौतिक संपत्ति और वैभव जोड़ने में लगा है। इसके विपरीत कवि 'बना-बना कितने जग' मिटाने की बात करता है और वैभव वाली पृथ्वी को भी ठुकराता है। वह धन-संचय से अपने जीवन की सार्थकता नहीं मापता। इस प्रकार कवि का भाव-संसार और जगत का भौतिकतावादी संसार परस्पर भिन्न हैं; इसी कारण दोनों का सहज मेल नहीं बैठता।

चरण 3: निष्कर्ष कवि का संसार से वैचारिक और भावनात्मक मेल नहीं है, क्योंकि संसार वैभव-संचय को महत्त्व देता है, जबकि कवि अपने भावों और कल्पना-जगत को महत्त्व देता है।

त्वरित सुझाव: 'किस प्रकार' का उत्तर भिन्नता से और 'क्यों' का उत्तर वैभव-संचय तथा भाव-जगत के अंतर से दीजिए।

7(ख). 'जग बनाने और मिटाने' से कवि का क्या आशय है ? वह किस रूप में जग की रचना करता है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में 'जग' शब्द का अर्थ केवल भौतिक संसार नहीं है। यहाँ वह कवि द्वारा कल्पना और भावनाओं से रचे संसार का संकेत है।
- 'बना-बना' और 'रोज़ मिटाता' कवि की निरंतर बदलती अनुभूतियों तथा रचनात्मक प्रक्रिया को व्यक्त करते हैं।

चरण 1: बनाने और मिटाने का आशय समझिए कवि अपने मन में कल्पना, इच्छाओं और भावनाओं के अनेक संसार बनाता है। अनुभूतियाँ बदलने पर पुराने कल्पना-जगत को छोड़कर नया संसार रचता है। इसलिए 'जग बनाने और मिटाने' का अर्थ वास्तविक पृथ्वी या नगरों का निर्माण और विनाश करना नहीं है। यह उसके मन में भावों, सपनों और आदर्शों के निरंतर बनने तथा बदलने की प्रक्रिया है।

चरण 2: रचना का रूप बताइए कवि इस भावात्मक जगत को अपनी काव्य-रचनाओं के रूप में अभिव्यक्त करता है। उसकी कल्पना, प्रेम और निजी अनुभूतियाँ कविता में रूप ग्रहण करती हैं। संसार जहाँ भौतिक वैभव जोड़ता है, वहीं कवि भावों की दुनिया रचता है। इस तरह 'मैं बना-बना कितने जग रोज़ मिटाता' उसकी सृजनशीलता और नई अनुभूतियों के साथ नए काव्य-जगत की रचना की ओर संकेत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष 'जग बनाने और मिटाने' से आशय मन में कल्पना और भावों के संसार रचना तथा बदलना है। कवि इन संसारों को अपनी कविताओं के रूप में अभिव्यक्त करता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो हिस्से रखें: पहले कल्पना-जगत के बनने-बदलने का अर्थ, फिर उसकी अभिव्यक्ति के रूप में काव्य-रचना।

7(ग). वैभवशाली पृथ्वी से भी कवि का लगाव क्यों नहीं है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में 'पृथ्वी' उस भौतिक संसार का संकेत है जहाँ लोग धन और वैभव संचित करते हैं। उसके प्रति कवि की अनासक्ति को कारण सहित बताना है।
- 'जग जिस पृथ्वी पर जोड़ा करता वैभव' और 'मैं प्रति पग से उस पृथ्वी को ठुकराता' में संसार तथा कवि के मूल्यों का अंतर स्पष्ट है।

चरण 1: संसार के आकर्षण को पहचानिए सामान्य संसार धन-संपत्ति, सुख-सुविधाओं और बाहरी वैभव को जीवन की सफलता मानता है। वह इन्हें बढ़ाने में लगा रहता है। पद्यांश में पृथ्वी इसी वैभव-संचय का स्थान है। इसलिए यहाँ प्रश्न प्राकृतिक धरती की सुंदरता का नहीं, उस सांसारिक समृद्धि का है जिसे लोग अपना लक्ष्य बनाए हुए हैं।

चरण 2: कवि की प्राथमिकता स्पष्ट कीजिए कवि बाहरी संपन्नता की तुलना में अपने अंतर्मन की अनुभूतियों, प्रेम और कल्पना-जगत को अधिक महत्त्व देता है। वह अपना भाव-जगत धन या ऐश्वर्य के बदले नहीं छोड़ना चाहता। 'प्रति पग' पृथ्वी को ठुकराना बताता है कि उसकी दृष्टि में भौतिक वैभव जीवन का परम लक्ष्य नहीं है। इसलिए वैभवशाली होने पर भी यह संसार उसे आकर्षित नहीं करता और उसके मन में इसके प्रति मोह नहीं है।

चरण 3: निष्कर्ष वैभवशाली पृथ्वी से कवि का लगाव इसलिए नहीं है कि वह भौतिक धन-संपत्ति की अपेक्षा अपने भाव-जगत और आंतरिक संतोष को अधिक मूल्यवान मानता है।

त्वरित सुझाव: 'पृथ्वी को ठुकराना' का अर्थ प्रकृति से घृणा न लिखें; इसे धन-संचय और बाहरी वैभव के प्रति अनासक्ति से जोड़ें।

7(घ). 'रोदन में राग' और 'शीतल वाणी में आग' से कवि क्या आशय है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कवि अपने व्यक्तित्व में दुःख और संगीत तथा कोमलता और विद्रोह को एक साथ लेकर चलता है।
- पद्यांश में रोदन, राग, शीतलता और आग अपने सामान्य अर्थ से आगे बढ़कर कवि की आंतरिक अनुभूतियों के संकेत बनते हैं।

चरण 1: रोदन में निहित राग समझिए 'रोदन में राग' का आशय है कि कवि अपने जीवन की पीड़ा और दुख को भी गीतों के मधुर स्वर में व्यक्त करता है। उसका काव्य निजी वेदना से जन्म लेता है, किंतु उसमें केवल विलाप नहीं, संगीत और भाव-सौंदर्य भी है। वह दुःख को कलात्मक अभिव्यक्ति देता है।

चरण 2: शीतल वाणी की आग पहचानिए 'शीतल वाणी में आग' का अर्थ है कि कवि की भाषा सुनने में शांत, मधुर और कोमल है, पर उसके भीतर अन्यायपूर्ण व्यवस्था और भौतिक वैभव के प्रति असंतोष तथा विद्रोह की ज्वाला है। पृथ्वी के वैभव को ठुकराने की बात इस आंतरिक विरोध को स्पष्ट करती है।

चरण 3: निष्कर्ष कवि की वेदना गीत बनती है और उसकी शांत-मधुर वाणी के भीतर विद्रोह की तीव्र भावना छिपी रहती है।

त्वरित सुझाव: दोनों अभिव्यक्तियों का अर्थ अलग लिखिए: रोदन को काव्य-संगीत से और शीतल वाणी को भीतर के विद्रोह से जोड़िए।

अथवा

7. आतंक अंक पर काँप रहे हैं
धनी, वज्र-गर्जन से बादल !
त्रस्त-नयन मुख ढाँप रहे हैं ।
जीर्ण बाहु, है शीर्ण शरीर,
तुझे बुलाता कृषक अधीर
ऐ विप्लव के वीर !
चूस लिया है उसका सार,
हाड़-मात्र ही है आधार,
ऐ जीवन के पारावार !
निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

7(क). 'त्रस्त-नयन' कौन हैं ? उनके मुख ढाँपने का क्या कारण है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- पद्यांश में बादल क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक है; उसकी गर्जना शोषक व्यवस्था के लिए चुनौती बनती है।
- धनी वर्ग और पीड़ित किसान की विपरीत प्रतिक्रियाओं से कविता का सामाजिक आशय खुलता है।

चरण 1: त्रस्त लोगों की पहचान कीजिए 'त्रस्त-नयन' वे धनी और शोषक लोग हैं जिनके नेत्र भय से व्याकुल हैं। पहले ही 'धनी' शब्द आने से इनका परिचय स्पष्ट हो जाता है। इसलिए यह विशेषण उस किसान के लिए नहीं है जो बादल को उत्सुक होकर बुला रहा है।

चरण 2: मुख ढाँपने का कारण समझिए बादल की वज्र जैसी गर्जना उन्हें क्रांति की आहट सुनाती है। वे डरते हैं कि परिवर्तन से उनका संचित वैभव, सत्ता और शोषण पर आधारित प्रभुत्व नष्ट हो जाएगा। इसी आतंक से वे काँपते हैं और अपना मुख ढाँप लेते हैं। यह केवल वर्षा से बचाव का वर्णन नहीं, अपने हितों पर संकट देखकर भयभीत होने का चित्र है।

चरण 3: निष्कर्ष त्रस्त-नयन धनी शोषक हैं। क्रांति के प्रतीक बादल की गर्जना से अपने वैभव और प्रभुत्व के विनाश की आशंका के

कारण वे मुख ढाँपते हैं।

त्वरित सुझाव: पहचान के लिए पद्यांश का 'धनी' शब्द लें और कारण में बादल के क्रांतिकारी अर्थ को स्पष्ट करें।

7(ख). कृषक की अधीरता का क्या कारण है ? उसकी शारीरिक दशा पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- किसान के लिए बादल वर्षा, जीवन और शोषण से मुक्ति की आशा का प्रतीक है।
- जीर्ण बाहु, शीर्ण शरीर और हाड़-मात्र जैसे शब्द किसान की शारीरिक दुर्बलता को प्रत्यक्ष करते हैं।

चरण 1: अधीरता का कारण बताइए किसान की आजीविका वर्षा पर निर्भर है। वह बादल की प्रतीक्षा करता है ताकि वर्षा से खेतों में जीवन आए और उसका अभाव दूर हो। पद्यांश में 'विप्लव के वीर' संबोधन से यह आशा भी व्यक्त होती है कि परिवर्तन उसे शोषण और कष्ट से मुक्ति दिलाएगा। इसी जीवनदायी परिवर्तन की चाह उसे अधीर बनाती है।

चरण 2: शारीरिक दशा का वर्णन कीजिए किसान की भुजाएँ कमजोर और शरीर अत्यंत क्षीण हो गया है। 'चूस लिया है उसका सार' उसके निरंतर शोषण का संकेत है। श्रम और अभाव ने उसकी शक्ति छीन ली है तथा वह केवल हड्डियों का ढाँचा रह गया है। 'जीर्ण बाहु' और 'शीर्ण शरीर' उसी दयनीय दशा के साक्ष्य हैं।

चरण 3: निष्कर्ष किसान वर्षा और शोषण से मुक्ति की आशा में अधीर है। उसका शरीर दुर्बल, भुजाएँ जर्जर और देह हड्डियों का ढाँचा बन चुकी है।

त्वरित सुझाव: प्रश्न के दोनों पक्ष अलग रखें: अधीरता में वर्षा और मुक्ति की आशा; शारीरिक दशा में पद्यांश के ठोस विशेषण।

7(ग). 'विप्लव का वीर' कौन है ? उसके लिए यह सम्बोधन क्यों प्रयुक्त किया गया है ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता में बादल प्राकृतिक सत्ता होने के साथ सामाजिक क्रांति का प्रतीक भी है।
- संबोधन का औचित्य समझाते समय धनी वर्ग के भय और कृषक की आशा, दोनों को देखना आवश्यक है।

चरण 1: विप्लव के वीर की पहचान कीजिए 'विप्लव का वीर' बादल है। पद्यांश में किसान उसी को अधीर होकर बुलाता है। 'विप्लव' का अर्थ क्रांति अथवा ऐसा व्यापक परिवर्तन है जो पुरानी अन्यायपूर्ण व्यवस्था को उलट दे। अत: यहाँ किसी व्यक्ति विशेष या किसान को यह संबोधन नहीं दिया गया है।

चरण 2: संबोधन का औचित्य स्पष्ट कीजिए बादल की प्रचंड गर्जना धनी शोषकों को भयभीत करती है, जबकि उसकी वर्षा पीड़ित किसान के लिए नया जीवन लाती है। वह शोषण पर आधारित व्यवस्था के विनाश और जनजीवन के नवनिर्माण, दोनों का प्रतीक है। अन्याय को चुनौती देने वाले इस निर्भीक और परिवर्तनकारी रूप के कारण उसे क्रांति का वीर कहा गया है।

चरण 3: निष्कर्ष बादल को विप्लव का वीर कहा गया है क्योंकि वह शोषकों के लिए विनाशकारी परिवर्तन और शोषित किसान के लिए जीवन तथा मुक्ति की आशा का प्रतीक है।

त्वरित सुझाव: संबोधन समझाते हुए पहले बादल की पहचान दें, फिर उसके विनाशकारी और जीवनदायी दोनों रूप जोड़ें।

7(घ). आशय स्पष्ट कीजिए :

'चूस लिया है उसका सार,

हाड़-मात्र ही है आधार' [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- काव्य-पंक्तियों का आशय उनके प्रसंग से निकलता है; यहाँ सर्वनाम किसान की ओर संकेत करता है।
- सार चूसने और हड्डियाँ बचने की अभिव्यक्तियाँ शोषण के कारण जीवन-शक्ति समाप्त होने का मार्मिक चित्र हैं।

चरण 1: शोषण के संकेत को समझिए 'चूस लिया है उसका सार' में 'उसका' किसान के लिए आया है। धनी शोषक वर्ग ने उसके श्रम का लाभ अपने पास रखकर उसकी जीवन-शक्ति और सामर्थ्य छीन लिया है। यहाँ सार चूसना किसी शाब्दिक क्रिया का वर्णन नहीं, निरंतर आर्थिक शोषण की तीव्रता को व्यक्त करने वाली अभिव्यक्ति है।

चरण 2: दुर्बल शरीर का आशय बताइए 'हाड़-मात्र ही है आधार' का अर्थ है कि किसान इतना कमजोर हो गया है कि उसके शरीर में मानो हड्डियों के अतिरिक्त कुछ बचा ही नहीं। अभाव, कठिन परिश्रम और शोषण ने उसके स्वास्थ्य को नष्ट कर दिया है। पास की 'जीर्ण बाहु' और 'शीर्ण शरीर' पंक्तियाँ इस अर्थ को पुष्ट करती हैं तथा पाठक के मन में करुणा जगाती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष इन पंक्तियों में शोषित किसान की दुर्दशा है: उसके श्रम और जीवन-शक्ति का दोहन हो चुका है और उसका शरीर केवल हड्डियों का ढाँचा रह गया है।

त्वरित सुझाव: आशय में पहले किसान का शोषण लिखें, फिर उसके शरीर पर पड़ा प्रभाव; केवल शब्दों का पर्याय लिखकर न रुकें।

---

8. तुलसी सरनाम गुलामु है राम को, जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ ।

माँगि कै खैबो, मसीत को सोइबो, लैबेको एकु न दैबेको दोऊ ।

निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

8(क). अनुप्रास अलंकार के दो उदाहरण चुनकर लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- एक ही व्यंजन वर्ण की निकटवर्ती शब्दों में आवृत्ति से उत्पन्न ध्वनि-सौंदर्य को अनुप्रास कहते हैं।
- उदाहरण के साथ दोहराया गया वर्ण लिखने पर अलंकार की पहचान स्पष्ट और प्रमाणित हो जाती है।

चरण 1: पहला उदाहरण चुनिए 'कहै कछु' में 'क' वर्ण की आवृत्ति है। दोनों शब्दों के आरंभ में एक ही व्यंजन आता है, जिससे कथन में ध्वन्यात्मक लय पैदा होती है। यह अंश 'जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ' से लिया गया है और सीधे दिए हुए काव्यांश में उपलब्ध है।

चरण 2: दूसरा उदाहरण चुनिए 'दैबेको दोऊ' में 'द' वर्ण की आवृत्ति है। दोनों शब्दों की आरंभिक ध्वनि समान होने से अनुप्रास का सौंदर्य बनता है। 'दैबेको' के भीतर आने वाला 'क' इस पहचान को नहीं बदलता; यहाँ मुख्य पुनरावृत्ति 'द' की है। अनुप्रास के लिए पूरे शब्द का समान होना आवश्यक नहीं, व्यंजन की आवृत्ति पर्याप्त होती है।

चरण 3: निष्कर्ष अनुप्रास के दो उदाहरण हैं: 'कहै कछु' में 'क' की आवृत्ति तथा 'दैबेको दोऊ' में 'द' की आवृत्ति।

त्वरित सुझाव: उदाहरण लिखते समय नीचे वही व्यंजन पहचानिए जो दोनों पास-पास के शब्दों में दोहराया गया है।

8(ख). काव्यांश के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक सौंदर्य में भाषा का रूप, शब्द-चयन, ध्वनि-सौंदर्य और कथन की सहजता देखी जाती है।
- इस काव्यांश की ब्रजभाषा लोकजीवन के निकट और कवि के निर्भीक व्यक्तित्व के अनुकूल है।

चरण 1: भाषा और शब्दावली पहचानिए काव्यांश की भाषा सरस, सहज और प्रभावपूर्ण ब्रजभाषा है। 'खैबो', 'सोइबो', 'लैबेको' और 'दैबेको' जैसे रूप उसके क्षेत्रीय स्वरूप को स्पष्ट करते हैं। 'गुलामु' और 'मसीत' जैसे बोलचाल में आए अरबी मूल के शब्द इसकी भाषा को लोकव्यवहार से जोड़ते हैं। कथन सरल होने पर भी कवि की दृढ़ता प्रभावशाली ढंग से व्यक्त होती है।

चरण 2: लय और अभिव्यक्ति का प्रभाव बताइए 'कहै कछु' तथा 'दैबेको दोऊ' में अनुप्रास से ध्वनि-सौंदर्य है। 'खैबो' और 'सोइबो' जैसे समान ध्वनि वाले पद लय पैदा करते हैं। 'लैबेको एकु न दैबेको दोऊ' की लोकोक्तिपरक अभिव्यक्ति कवि की निर्लिप्तता को संक्षेप में कह देती है। इस प्रकार भाषा में सहजता, प्रवाह और ओज का मेल है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में लोकप्रचलित शब्दों वाली सरल ब्रजभाषा, लय, अनुप्रास तथा लोकोक्तिपरक कथन से सजीव और प्रभावपूर्ण भाषिक सौंदर्य उत्पन्न हुआ है।

त्वरित सुझाव: भाषा की विशेषता के साथ काव्यांश का एक उदाहरण अवश्य जोड़ें; केवल अलंकारों के नाम गिनाना पर्याप्त नहीं है।

8(ग). काव्यांश का भाव-वैशिष्ट्य लिखिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाव-वैशिष्ट्य में कवि की केंद्रीय अनुभूति और जीवन-दृष्टि को पाठ के आधार पर स्पष्ट किया जाता है।
- यहाँ रामभक्ति के साथ लोकनिंदा से निडरता, सादगी और सांसारिक लेन-देन से निर्लिप्तता का मेल है।

चरण 1: राम के प्रति समर्पण समझिए तुलसी स्वयं को राम का प्रसिद्ध सेवक बताते हैं। 'सरनाम गुलामु है राम को' उनके अनन्य समर्पण और अपने आराध्य पर दृढ़ विश्वास की अभिव्यक्ति है। 'जाको रुचै सो कहै कछु ओऊ' से स्पष्ट है कि वे दूसरों की निंदा अथवा प्रशंसा से अपना जीवन-पथ बदलने वाले नहीं हैं। भक्ति उन्हें आत्मविश्वास और निर्भीकता देती है।

चरण 2: जीवन-दृष्टि का वैशिष्ट्य बताइए माँगकर भोजन करना और मस्जिद में सो जाना उनकी सहज, सादी जीवनचर्या तथा सामाजिक बंधनों से मुक्त दृष्टि को व्यक्त करता है। वे किसी से कुछ पाने या किसी को देने के सांसारिक व्यवहार में बँधना नहीं चाहते। धन और प्रतिष्ठा का लोभ न होने से उनका जीवन स्वाभिमानी और निश्चिंत है; भक्ति उन्हें संकीर्ण भेदों से ऊपर उठाती है।

चरण 3: निष्कर्ष काव्यांश में तुलसी की अनन्य रामभक्ति, लोकापवाद से निर्भीकता, सादगी, व्यापक दृष्टि और सांसारिक मोह से निर्लिप्त जीवन का भाव प्रमुख है।

त्वरित सुझाव: भाव-वैशिष्ट्य लिखते समय पहले रामभक्ति बताइए, फिर उसी से जुड़ी निर्भीकता और सादगी के पाठगत उदाहरण दीजिए।

अथवा

8. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे
भोर का नभ
राख से लीपा हुआ चौका
(अभी गीला पड़ा है)
बहुत काली सिल जरा से लाल केसर से
कि जैसे घुल गई हो
स्लेट पर या लाल खड़िया चाक
मल दी हो किसी ने
निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [6 अंक]

8(क). प्रात नभ की तुलना किससे की गई है और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- उपमा में किसी दृश्य की विशेषता परिचित वस्तु से तुलना करके स्पष्ट की जाती है। यहाँ प्रातःकालीन आकाश के रंग और निर्मलता का चित्र उपस्थित है।
- उत्तर का आधार काव्यांश की पहली पंक्ति 'प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसे' है; तुलना और उसका कारण दोनों बताने हैं।

चरण 1: तुलना को पहचानिए कवि ने प्रातःकाल के आकाश की तुलना बहुत नीले शंख से की है। इस तुलना में प्रातःकालीन नभ उपमेय है और नीला शंख उपमान है। 'जैसे' शब्द तुलना को प्रत्यक्ष बनाता है। यहाँ शंख की ध्वनि का नहीं, उसके रंग और रूप का संकेत है।

चरण 2: समान गुणों को स्पष्ट कीजिए सूर्योदय से पहले आकाश गहरे नीले रंग का दिखाई देता है। उसकी निर्मलता, ताजगी और शांत सौंदर्य नीले शंख का आभास कराते हैं। शंख की स्वच्छ चमक की तरह भोर का आकाश भी उजला और पवित्र अनुभूति देने वाला है। इस परिचित उपमान से पाठक प्रातःकाल के नीले नभ की सुंदर छवि मन में बना लेता है।

चरण 3: निष्कर्ष प्रातःकालीन नभ को उसके गहरे नीले रंग, निर्मलता और शांत सौंदर्य के कारण नीले शंख जैसा बताया गया है।

त्वरित सुझाव: 'किससे और क्यों' के उत्तर में पहले नीले शंख का नाम लिखिए, फिर उससे मिलने वाले आकाश के रंग और निर्मलता को स्पष्ट कीजिए।

8(ख). काव्यांश में चित्रित परिवेश के वैशिष्ट्य पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- परिवेश का वैशिष्ट्य बताते समय प्रकृति के रूप के साथ उन परिचित वस्तुओं पर ध्यान देना चाहिए जिनसे कवि ने उसका चित्र बनाया है।
- चौका, सिल, केसर, स्लेट और खड़िया के बिंब घरेलू तथा ग्रामीण जीवन से प्रातःकालीन प्रकृति का संबंध स्थापित करते हैं।

चरण 1: प्रातःकालीन प्राकृतिक दृश्य समझिए काव्यांश में सूर्योदय से ठीक पहले के आकाश का शांत, ताजा और धीरे-धीरे बदलता दृश्य है। पहले आकाश गहरा नीला है; फिर उसमें राख जैसा धूसर रंग और लालिमा उभरती है। काली सिल पर लाल केसर तथा स्लेट पर लाल खड़िया के बिंब अँधेरे के बीच फैलती लाली को सजीव बनाते हैं।

चरण 2: घरेलू और ग्रामीण आत्मीयता पहचानिए राख से लीपा और अभी गीला पड़ा चौका ग्रामीण घर की स्वच्छता तथा ताजगी याद दिलाता है। सिल पर केसर घुलने का चित्र घरेलू कामकाज से जुड़ा है, जबकि स्लेट और खड़िया बालक के परिचित संसार को सामने लाते हैं। कवि ने विशाल आकाश का सौंदर्य इन्हीं साधारण वस्तुओं के माध्यम से दिखाया है। इससे प्रकृति दूर की वस्तु न रहकर घर-आँगन

जैसी आत्मीय लगती है।

चरण 3: निष्कर्ष इस परिवेश की विशेषता प्रातःकाल के बदलते रंगों, शांति और ताजगी का ग्रामीण घरेलू जीवन के सहज बिंबों के साथ आत्मीय संयोजन है।

त्वरित सुझाव: परिवेश के उत्तर में 'राख से लीपा चौका' और 'काली सिल' जैसे दो बिंब जोड़कर उनके ग्रामीण तथा घरेलू संबंध को स्पष्ट कीजिए।

8(ग). पद्यांश के भाषिक सौन्दर्य को स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- भाषिक सौंदर्य में शब्द-चयन, बिंब, अलंकार और अभिव्यक्ति की शैली का उदाहरण सहित विवेचन किया जाता है।
- प्रस्तुत अंश की सरल खड़ी बोली और परिचित घरेलू उपमान उषाकाल के दृश्य को चित्रात्मक बनाते हैं।

चरण 1: शब्दों और बिंबों की भूमिका बताइए 'नभ' और 'प्रात' जैसे साहित्यिक शब्दों के साथ चौका, राख, सिल, स्लेट और खड़िया जैसे रोजमर्रा के शब्द आए हैं। इस मेल से भाषा सरल, सहज और आत्मीय बनी है। नीला, काली और लाल जैसे रंगसूचक शब्द आकाश की बदलती छवि सामने लाते हैं। गीले चौके का बिंब दृश्य के साथ ताजगी की अनुभूति भी कराता है।

चरण 2: अलंकार और शैली स्पष्ट कीजिए 'नीला शंख जैसे' में उपमा अलंकार है, क्योंकि नभ की तुलना नीले शंख से की गई है। 'कि जैसे घुल गई हो' में काली सिल पर केसर घुलने की संभावना के द्वारा उत्प्रेक्षा का सौंदर्य आता है। छोटी-बड़ी पंक्तियों वाला मुक्तछंद दृश्य के धीरे-धीरे खुलने की गति के अनुकूल है। '(अभी गीला पड़ा है)' जैसा कोष्ठकयुक्त कथन बोलचाल की स्वाभाविक टिप्पणी का प्रभाव पैदा करता है।

चरण 3: निष्कर्ष सरल खड़ी बोली, रंगप्रधान दृश्य-बिंब, उपमा-उत्प्रेक्षा और मुक्तछंद की सहज गति मिलकर पद्यांश को चित्रात्मक तथा प्रभावपूर्ण बनाते हैं।

त्वरित सुझाव: भाषिक सौंदर्य बताते समय केवल अलंकारों के नाम न लिखिए; 'नीला शंख जैसे' और रंगसूचक शब्दों जैसे उदाहरण भी जोड़िए।

9(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' कविता के आधार पर चिड़िया के परों में चंचलता और कवि के पदों की शिथिलता के कारणों पर विचार करते हुए कविता के प्रतिपाद्य को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- 'दिन जल्दी-जल्दी ढलता है' में ढलते दिन की पृष्ठभूमि में प्रियजनों से मिलने की इच्छा और अकेलेपन की अनुभूति का अंतर व्यक्त हुआ है।
- चिड़िया और कवि की गति में अंतर बाहरी परिस्थिति से अधिक उनकी मानसिक स्थिति का परिणाम है; कविता का प्रतिपाद्य इसी विरोध से स्पष्ट होता है।

चरण 1: चिड़िया की चंचलता का कारण बताइए चिड़िया के बच्चे घोंसले में उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। उन्हें माँ से भोजन और स्नेह मिलने की आशा है। दिन ढलते देखकर चिड़िया जल्द से जल्द बच्चों तक पहुँचना चाहती है। बच्चों की प्रतीक्षा और उनसे मिलने की आतुरता उसके परों में चंचलता भर देती है। यह स्नेह उसे थकान के बावजूद शीघ्र घर लौटने के लिए प्रेरित करता है।

चरण 2: कवि की शिथिलता समझिए कवि की मन:स्थिति चिड़िया से भिन्न है। उसे लगता है कि उसकी प्रतीक्षा करने वाला कोई नहीं है। कविता में उसका प्रश्न है, 'मुझसे मिलने को कौन विकल?' घर जाकर मिलने का कोई उत्सुक प्रियजन न होने की अनुभूति उसके

उत्साह को घटा देती है। इसलिए जहाँ चिड़िया की गति बढ़ती है, वहाँ कवि के कदम शिथिल हो जाते हैं और उसका हृदय विह्वल हो उठता है।

चरण 3: दोनों स्थितियों से प्रतिपाद्य निकालिए ढलता दिन समय के निरंतर बीतने का बोध कराता है। प्रियजनों का स्नेह, प्रतीक्षा और उनसे मिलने का लक्ष्य जीवन को गति तथा उत्साह देते हैं। इनके अभाव में वही समय अकेलेपन और निराशा को गहरा करता है। कवि ने चिड़िया की उत्सुकता और अपनी शिथिलता के माध्यम से मानवीय संबंधों की प्रेरक शक्ति तथा आत्मीयता की आवश्यकता व्यक्त की है।

चरण 4: निष्कर्ष चिड़िया को बच्चों का प्रेम सक्रिय करता है, जबकि प्रतीक्षारत प्रियजन के अभाव का बोध कवि को शिथिल बनाता है। कविता प्रेम और आत्मीय संबंधों को जीवन की गति तथा सार्थकता का आधार बताती है।

त्वरित सुझाव: उत्तर को 'बच्चों की प्रतीक्षा', 'कवि का अकेलापन' और 'स्नेह से मिलने वाली जीवन-प्रेरणा' के क्रम में रखिए, ताकि प्रतिपाद्य सीधे कारणों से जुड़े।

9(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'सही बात का सही शब्द से जुड़ना' क्यों ज़रूरी है ? ऐसा न होने के क्या दुष्परिणाम हो सकते हैं ? 'बात सीधी थी, पर' के आधार पर स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- कविता भाव और भाषा के सहज संबंध का महत्त्व समझाती है। भाषा की सार्थकता तभी है जब वह बात के आशय को स्पष्ट और प्रभावपूर्ण ढंग से व्यक्त करे।
- अनावश्यक शब्दाडंबर और भाषा को प्रभावशाली बनाने का कृत्रिम प्रयास संप्रेषण में बाधा बन सकता है; कविता इसी प्रवृत्ति की आलोचना करती है।

चरण 1: सही शब्द की आवश्यकता समझिए हर विचार का एक निश्चित आशय और भाव होता है। उससे मेल खाने वाला शब्द ही उसे पाठक तक ठीक रूप में पहुँचाता है। सही बात सही शब्द से जुड़ती है तो अभिव्यक्ति सहज, सटीक और प्रभावी बनती है। शब्द का चुनाव केवल उसकी चमक या कठिनाई देखकर नहीं, उस बात की आवश्यकता देखकर होना चाहिए। इससे भाव की गरिमा भी बनी रहती है और पाठक को अर्थ समझने के लिए अनावश्यक उलझन नहीं होती।

चरण 2: कविता की स्थिति से दुष्परिणाम स्पष्ट कीजिए कवि एक सीधी बात कहना चाहता है, पर भाषा के चक्कर में वह टेढ़ी हो जाती है। उसे अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए बार-बार शब्द बदलने और भाषा को घुमाने से बात और उलझती जाती है। कविता में जबरदस्ती कसने से पेंच की चूड़ी बिगड़ने का बिंब इसी स्थिति को समझाता है। अनुचित प्रयोग से भाषा बात को सँभालने के बजाय उसकी शक्ति नष्ट करने लगती है।

चरण 3: पाठक पर पड़ने वाला प्रभाव बताइए सही शब्द न मिलने पर मूल भाव अस्पष्ट, विकृत या निष्प्रभावी हो जाता है। रचनाकार का ध्यान बात से हटकर भाषिक कौशल के प्रदर्शन पर टिक जाता है और पाठक तक अपेक्षित अर्थ नहीं पहुँचता। इसलिए कविता सहजता और भावानुकूल भाषा का समर्थन करती है। किसी सामान्य बात को केवल कठिन शब्दों में रख देने से वह अधिक अर्थपूर्ण नहीं हो जाती।

चरण 4: निष्कर्ष सही शब्द से जुड़कर ही सही बात अपना पूरा अर्थ और प्रभाव व्यक्त करती है। इस मेल के अभाव में भाषा कृत्रिम, बात उलझी हुई और संप्रेषण कमजोर हो जाता है।

त्वरित सुझाव: पहले भावानुकूल शब्दों का लाभ बताइए, फिर 'भाषा के चक्कर' और पेंच की चूड़ी के बिंब से अनुचित शब्द-प्रयोग का नुकसान समझाइए।

9(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

पेट की आग राम-भक्ति के मेघ से ही शान्त हो सकती है – तुलसी की रचना की पृष्ठभूमि में तत्कालीन सामाजिक दशा पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- तुलसीदास की 'कवितावली' में पेट की आग भूख और आजीविका की पीड़ा का प्रतीक है। इसके माध्यम से समाज की व्यापक आर्थिक दुर्दशा व्यक्त हुई है।
- राम की कृपा का मेघ भक्त कवि की अंतिम आशा है। भूख की भयानक आग और उसे शांत करने वाले मेघ का संबंध सामाजिक यथार्थ तथा भक्ति-विश्वास को जोड़ता है।

चरण 1: आजीविका के संकट को स्पष्ट कीजिए तुलसी के समय समाज में गरीबी, बेरोजगारी और भुखमरी फैली हुई थी। किसान को खेती से निर्वाह नहीं मिल रहा था, भिखारी को भीख नहीं, व्यापारी को व्यापार नहीं और सेवक को नौकरी नहीं मिलती थी। जीविका के साधन बंद होने से लोग चिंतित थे और एक-दूसरे से पूछते थे कि कहाँ जाएँ तथा क्या करें। इससे स्पष्ट है कि संकट किसी एक व्यक्ति का नहीं, समाज के अनेक वर्गों का था।

चरण 2: भूख से उपजी विवशता समझिए पेट भरने के लिए लोग अनेक काम करते थे और कठिन जोखिम उठाते थे। भूख उन्हें उचित-अनुचित का विचार छोड़ने को विवश कर देती थी। स्थिति इतनी दयनीय थी कि लोग अपनी संतानों तक को बेचने के लिए बाध्य हो जाते थे। कवि पेट की आग को समुद्र की भीषण आग से भी अधिक भयानक बताता है। यह तुलना भूख के उस दबाव को व्यक्त करती है जो मनुष्य के स्नेह, सम्मान और नैतिक विवेक को भी संकट में डाल देता है।

चरण 3: राम-भक्ति के मेघ का आशय बताइए जब सांसारिक सहारे निष्फल दिखाई देते हैं, तब भक्त तुलसी राम की करुणा और कृपा को आश्रय मानते हैं। जैसे मेघ की वर्षा आग बुझाती है, वैसे ही राम का अनुग्रह इस असहनीय दुख से मुक्ति की आशा देता है। यहाँ भक्ति का कथन तत्कालीन निर्धन जनता की पीड़ा के प्रति संवेदना और निराशा के बीच बची हुई आस्था व्यक्त करता है।

चरण 4: निष्कर्ष यह कथन तत्कालीन समाज की व्यापक गरीबी, आजीविका के अभाव और भूख से उपजे नैतिक संकट को सामने लाता है। तुलसी इस असहाय स्थिति में राम की कृपा को दुख-निवारण का अंतिम सहारा मानते हैं।

त्वरित सुझाव: सामाजिक दशा के उत्तर में किसान, व्यापारी और सेवक का संकट, भूख की चरम विवशता तथा राम-कृपा में आश्रय के तीन जुड़े बिंदु रखिए।

---

10. जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख की अपेक्षा दुख ही अधिक है । जब उसने गेहुँए रंग और बटिया जैसे मुख वाली पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले तब सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की । उचित भी था क्योंकि सास तीन-तीन कमाऊ वीरों की विधात्री बनकर मचिया के ऊपर विराजमान पुरखिन के पद पर अभिषिक्त हो चुकी थी और दोनों जिठानियाँ काक-भुशुंडि जैसे काले लालों की क्रमबद्ध सृष्टि करके इस पद के लिए उम्मीदवार थीं । छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया । जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करतीं और उनके कलूटे लड़के धूल उड़ाते; वह मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती, राँधती और उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं, कंडे पाथतीं ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). भक्तिन जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख क्यों न प्राप्त कर सकी ? उसके सुखाभाव के कारणों पर तर्कसहित विचार कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश भक्तिन के वैवाहिक जीवन में पुत्र-पुत्री के आधार पर किए जाने वाले भेदभाव को उजागर करता है।
- सुखाभाव का कारण समझाने के लिए परिवार की मानसिकता और उससे उत्पन्न व्यवहार को जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: पारिवारिक अपेक्षा पहचानिए भक्तिन ने पहली कन्या के बाद दो और कन्याओं को जन्म दिया। परिवार में पुत्रों को महत्त्व दिया जाता था। इसलिए सास और जिठानियों ने उसकी बेटियों के जन्म पर प्रसन्नता प्रकट करने के स्थान पर ओठ बिचकाकर उपेक्षा की। उसके परिश्रम और व्यक्तित्व की अपेक्षा संतान का लिंग उसके सम्मान का आधार बना दिया गया।

चरण 2: उपेक्षा के परिणाम समझिए सास पुत्रों की माता होने के कारण सम्मान पाती थी और जिठानियाँ भी पुत्रवती होने से श्रेष्ठ समझी जाती थीं। वे बैठकर बातें करतीं, जबकि भक्तिन मट्ठा फेरती, कूटती, पीसती और भोजन बनाती थी। उसकी छोटी बेटियों से भी गोबर उठवाया और कंडे पथवाए जाते थे। इस असमान व्यवहार और काम के बोझ ने उसे पारिवारिक सुख से वंचित रखा।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन को पुत्र-प्रधान मानसिकता, बेटियों के जन्म के कारण उपेक्षा और श्रम के अन्यायपूर्ण बँटवारे से जीवन के दूसरे परिच्छेद में भी सुख नहीं मिला।

त्वरित सुझाव: कारण बताते समय बेटियों के जन्म, परिवार की प्रतिक्रिया और काम के असमान बँटवारे को क्रम से जोड़िए।

10(ख). भक्तिन की सास और जिठानियों के पारिवारिक सम्मान-प्राप्ति का क्या कारण था तथा भक्तिन के प्रति उनके व्यवहार में क्या परिवर्तन हुआ ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- इस प्रसंग में स्त्रियों की प्रतिष्ठा का आधार पुत्रों को जन्म देना बना दिया गया है।
- सास और जिठानियों के सम्मान की तुलना भक्तिन की उपेक्षा से करके उत्तर के दोनों पक्ष स्पष्ट होते हैं।

चरण 1: सम्मान का आधार स्पष्ट कीजिए भक्तिन की सास तीन कमाऊ पुत्रों की माता थी। इसी कारण वह परिवार की सम्मानित बुजुर्ग स्त्री बनकर मचिया पर बैठती थी। दोनों जिठानियों ने भी पुत्रों को जन्म दिया था, इसलिए वे उसी प्रतिष्ठित स्थान की दावेदार समझी जाती थीं। यहाँ सम्मान का आधार गुण या श्रम नहीं, पुत्रवती होना था।

चरण 2: भक्तिन के प्रति व्यवहार बताइए भक्तिन की पहली बेटी के बाद दो और बेटियाँ हुईं तो सास और जिठानियों ने ओठ बिचकाकर उपेक्षा प्रकट की। पुत्रियों की माता होने के कारण उसे हीन समझकर कठिन घरेलू काम उसी पर डाल दिए गए। जिठानियाँ आराम से लोक-चर्चा करतीं और उनके पुत्र खेलते, जबकि भक्तिन और उसकी बेटियाँ लगातार काम करती थीं। इस प्रकार उपेक्षा व्यवहार में भेदभाव और श्रम के बोझ के रूप में सामने आई।

चरण 3: निष्कर्ष सास और जिठानियों को पुत्रवती होने से सम्मान मिला, जबकि तीन बेटियों की माता भक्तिन के प्रति उपेक्षा और कठोर व्यवहार बढ़ा।

त्वरित सुझाव: उत्तर को दो हिस्सों में रखिए: पहले पुत्रों के कारण मिला सम्मान, फिर भक्तिन के साथ किया गया भेदभाव।

10(ग). आशय स्पष्ट कीजिए – "छोटी बहू के लीक छोड़कर चलने के कारण उसे दंड मिलना आवश्यक हो गया ।" [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- व्यंग्य में कथन का शब्दशः अर्थ और लेखक का अभिप्राय अलग हो सकते हैं।
- यहाँ लीक छोड़ना पुत्रों के स्थान पर पुत्रियों को जन्म देने का व्यंग्यपूर्ण संकेत है।

चरण 1: लीक का प्रसंगगत अर्थ समझिए परिवार की सास और जिठानियों ने पुत्रों को जन्म दिया था। इसी को परिवार ने प्रतिष्ठा पाने की मान्य राह बना रखा था। छोटी बहू भक्तिन की तीन बेटियाँ हुईं, इसलिए उसे इस कथित राह से हटने वाली माना गया। यह उसकी कोई सचेत अवज्ञा या वास्तविक गलती नहीं थी; परिवार की पुत्र-प्रधान सोच उसे दोषी ठहरा रही थी।

चरण 2: दंड और व्यंग्य स्पष्ट कीजिए इस कथित अपराध के दंड के रूप में भक्तिन को उपेक्षा और कठोर परिश्रम मिला। जिठानियाँ बैठकर बातें करती थीं, जबकि वह मट्ठा फेरने, कूटने, पीसने और राँधने में लगी रहती थी। उसकी बेटियों से भी काम कराया जाता था। लेखिका दंड को उचित नहीं मानतीं; आवश्यक कहकर वे ऐसी अन्यायपूर्ण पारिवारिक मानसिकता पर व्यंग्य करती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष कथन का आशय है कि पुत्रियों को जन्म देने के कारण भक्तिन को अनुचित रूप से दोषी मानकर अपमान और श्रम का दंड दिया गया। यह पुत्र-प्रधान समाज पर व्यंग्य है।

त्वरित सुझाव: व्यंग्य का आशय लिखते समय दंड को लेखिका की स्वीकृति न मानें; परिवार के अन्याय पर उनकी चोट पहचानिए।

10(घ). भक्तिन और उसकी दोनों नन्हीं लड़कियों को पारिवारिक दण्ड किस रूप में भोगना पड़ा ? इस दण्ड के औचित्य-अनौचित्य के विषय में अपने विचार प्रस्तुत कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- दंड के रूप का प्रमाण गद्यांश में दिए घरेलू कामों और व्यवहार से मिलता है।
- औचित्य पर विचार करते समय संतान के लिंग के आधार पर भेदभाव और बच्चों पर श्रम के बोझ को परखना चाहिए।

चरण 1: माँ और बेटियों का दंड बताइए भक्तिन को मट्ठा फेरने, कूटने, पीसने और भोजन बनाने जैसे कठिन काम लगातार करने पड़ते थे। उसकी नन्हीं लड़कियाँ गोबर उठातीं और कंडे पाथती थीं। दूसरी ओर जिठानियाँ बैठकर लोक-चर्चा करती थीं और उनके लड़के धूल उड़ाते हुए खेलते थे। इस अंतर से स्पष्ट है कि भक्तिन और उसकी बेटियों के हिस्से में उपेक्षा के साथ असमान श्रम भी आया।

चरण 2: दंड की अनुचितता पर विचार कीजिए यह दंड सर्वथा अनुचित था, क्योंकि बेटियों को जन्म देना कोई अपराध नहीं है। केवल पुत्रों की माता को सम्मान देना और पुत्रियों की माता को नीचा समझना अन्याय है। छोटे बच्चों से कठिन काम लेना और उन्हें पुत्रों की तरह खेलने का अवसर न देना भी भेदभाव है। परिवार में काम का न्यायपूर्ण बँटवारा तथा सभी संतानों के प्रति समान स्नेह होना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष भक्तिन और उसकी लड़कियों को कठोर घरेलू श्रम तथा उपेक्षा का दंड मिला। पुत्रियों के जन्म के कारण दिया गया यह दंड अमानवीय और अन्यायपूर्ण था।

त्वरित सुझाव: पहले माँ और बेटियों के काम अलग-अलग लिखिए; फिर पुत्र-पुत्री के भेदभाव के आधार पर दंड की अनुचितता स्पष्ट कीजिए।

अथवा

10. रात्रि की विभीषिका को सिर्फ़ पहलवान की ढोलक ही ललकारकर चुनौती देती रहती थी । पहलवान संध्या से सुबह तक, चाहे जिस ख़याल से ढोलक बजाता हो, किन्तु गाँव के अर्धमृत, औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन प्राणियों में वह संजीवनी शक्ति ही भरती थी । बूढ़े-बच्चे-जवानों की शक्तिहीन आँखों के आगे दंगल का दृश्य नाचने लगता था । स्पन्दन-शक्ति शून्य स्नायुओं में भी बिजली दौड़ जाती थी । अवश्य ही ढोलक की आवाज में न तो बुखार हटाने का कोई गुण था और न महामारी की सर्वनाश शक्ति को रोकने की शक्ति ही, पर इसमें संदेह नहीं कि मरते हुए प्राणियों को आँख मूँदते समय कोई तकलीफ़ नहीं होती थी, मृत्यु से वे डरते नहीं थे ।

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए : [8 अंक]

10(क). रात्रि की विभीषिका कैसी थी ? ढोलक किस रूप में उसको चुनौती देती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- गद्यांश में महामारी, उपचार का अभाव और मृत्यु का भय रात्रि को विभीषिकापूर्ण बनाते हैं।
- ढोलक की चुनौती का अर्थ रोग का इलाज करना नहीं, संकटग्रस्त मनुष्यों का साहस जगाना है।

चरण 1: रात्रि की भयावहता समझिए गाँव में महामारी से लोग अर्धमृत अवस्था में थे। उन्हें औषधि, उपचार और उपयुक्त आहार नहीं मिल रहा था। मृत्यु का संकट सामने था और शरीर में शक्ति शेष नहीं थी। ऐसी निराशाजनक स्थिति में रात का समय भय और असहायता से भर जाता था। इसी भयावह वातावरण को रात्रि की विभीषिका कहा गया है।

चरण 2: ढोलक की चुनौती स्पष्ट कीजिए पहलवान संध्या से सुबह तक ढोलक बजाता था। उसकी ध्वनि लोगों की आँखों के आगे दंगल का दृश्य ले आती और शक्तिहीन शरीरों में भी उत्साह जगा देती थी। वह रोग या महामारी को रोक नहीं सकती थी, किंतु निराश मन में जीने और संघर्ष करने का साहस भरती थी। इस मानसिक बल से मरते हुए लोग भी मृत्यु से डरते नहीं थे।

चरण 3: निष्कर्ष रात्रि महामारी, असहायता और मृत्यु-भय के कारण विभीषिकापूर्ण थी। ढोलक लोगों में उत्साह तथा निर्भयता भरकर इस वातावरण को चुनौती देती थी।

त्वरित सुझाव: रात्रि का भय बताने के बाद ढोलक का मानसिक प्रभाव लिखिए; उसे बुखार दूर करने वाली औषधि न बताइए।

10(ख). दंगल का दृश्य किस-किसमें किन रूपों में उपयोगी होता था और क्यों ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढोलक की ताल बीमारी से दुर्बल लोगों को दंगल की सक्रियता और संघर्ष की याद दिलाती है।
- उत्तर में प्रभावित लोगों, उनमें आए परिवर्तन और उस परिवर्तन के कारण को अलग-अलग स्पष्ट करना है।

चरण 1: प्रभावित लोग और परिवर्तन पहचानिए ढोलक सुनकर गाँव के बूढ़ों, बच्चों और जवानों की शक्तिहीन आँखों के सामने दंगल का दृश्य नाचने लगता था। ये सभी महामारी और उपचार के अभाव से दुर्बल थे। दंगल की स्मृति उनके निराश मन में उत्साह तथा साहस भरती थी और शिथिल शरीरों में नई स्फूर्ति का अनुभव कराती थी। गद्यांश में इसे स्नायुओं में बिजली दौड़ जाने के रूप में व्यक्त किया गया है।

चरण 2: उपयोगिता का कारण समझाइए दंगल संघर्ष, शक्ति और जूझने की इच्छा का दृश्य है। ढोलक की ताल उस दृश्य को जीवंत करती थी, इसलिए असहाय लोग कुछ समय के लिए अपनी निष्क्रियता और मृत्यु-भय से ऊपर उठ पाते थे। यह लाभ मानसिक था; इससे बुखार दूर नहीं होता था। फिर भी संकट का सामना करने की क्षमता और निर्भयता मिलने से यह दृश्य उनके लिए उपयोगी था।

चरण 3: निष्कर्ष दंगल का दृश्य बूढ़ों, बच्चों और जवानों में स्फूर्ति, उत्साह तथा साहस जगाता था, क्योंकि वह उन्हें संघर्ष और शक्ति का अनुभव कराकर मृत्यु-भय से उबारता था।

त्वरित सुझाव: किस-किसमें का उत्तर बूढ़े-बच्चे-जवान से दीजिए और क्यों का उत्तर दंगल से जागी संघर्ष-भावना से जोड़िए।

10(ग). ढोलक की आवाज़ औषध-गुण-हीन होकर भी मृतप्रायों पर क्या प्रभाव डालती थी ? [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ढोलक की आवाज़ का औषधीय प्रभाव और उसका मनोबल बढ़ाने वाला प्रभाव अलग हैं।
- गद्यांश का संजीवनी शक्ति वाला कथन उत्साह, निर्भयता और मानसिक सहारे को व्यक्त करता है।

चरण 1: औषधीय सीमा पहचानिए लेखक स्पष्ट करता है कि ढोलक की आवाज़ में न बुखार उतारने का गुण था, न महामारी की विनाशकारी शक्ति को रोकने की क्षमता। इसलिए उसके प्रभाव को रोग ठीक होने या मृत्यु टल जाने के रूप में नहीं समझना चाहिए। गाँव के रोगियों की शारीरिक बीमारी और उपचार का अभाव बना रहता था।

चरण 2: मृतप्राय लोगों पर प्रभाव बताइए इसके बावजूद ढोलक की ध्वनि अर्धमृत लोगों में संजीवनी जैसी शक्ति भरती थी। उनके

सामने दंगल का दृश्य उभरता, मन में उत्साह आता और शिथिल स्नायुओं में बिजली दौड़ने जैसी स्फूर्ति अनुभव होती थी। वे भय से दबे रहने के बजाय साहस पाते थे। गद्यांश के अनुसार अंतिम समय में भी वे मृत्यु से नहीं डरते थे और आँख मूँदते समय उन्हें मानसिक सहारा मिलता था।

चरण 3: निष्कर्ष औषधीय गुण न होते हुए भी ढोलक मृतप्राय लोगों में उत्साह, स्फूर्ति और साहस भरती थी। वह मृत्यु का भय घटाकर उन्हें अंतिम समय में निर्भयता और सांत्वना देती थी।

त्वरित सुझाव: ढोलक का लाभ मनोबल में दिखाइए: उत्साह, स्फूर्ति और मृत्यु से निर्भयता; रोग ठीक होने का दावा न कीजिए।

10(घ). 'औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन' तथा 'स्पन्दन-शक्ति-शून्य स्नायुओं' का अर्थ स्पष्ट कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- समस्त पदों का अर्थ उनके घटकों को खोलकर और गद्यांश के प्रसंग से जोड़कर स्पष्ट होता है।
- दोनों पदबंध महामारी-पीड़ित ग्रामीणों की उपचारहीनता और अत्यधिक शारीरिक दुर्बलता व्यक्त करते हैं।

चरण 1: औषधि-उपचार-पथ्य-विहीन का अर्थ खोलिए औषधि का अर्थ दवा, उपचार का अर्थ चिकित्सा और पथ्य का अर्थ रोगी के लिए उपयुक्त तथा हितकर आहार है। विहीन का अर्थ है इनसे रहित। अतः यह पदबंध उन रोगियों के लिए आया है जिन्हें दवा, इलाज और बीमारी के अनुकूल भोजन तक उपलब्ध नहीं था। इससे उनकी असहाय दशा और आवश्यक सुविधाओं का अभाव प्रकट होता है।

चरण 2: स्पन्दन-शक्ति-शून्य स्नायुओं का आशय समझिए स्पन्दन का अर्थ हलचल या गति है और शक्ति-शून्य का अर्थ शक्ति से रहित है। यहाँ स्नायुओं से शरीर के वे अंग-तंतु अभिप्रेत हैं जिनमें सामान्य सक्रियता और स्फूर्ति होती है। बीमारी और कमजोरी से वे इतने शिथिल हो गए थे कि उनमें हलचल की शक्ति भी नहीं बची थी। पदबंध रोगियों की जड़ता और अत्यधिक दुर्बलता का चित्र प्रस्तुत करता है।

चरण 3: निष्कर्ष पहले पदबंध का अर्थ है दवा, चिकित्सा और उपयुक्त आहार से वंचित रोगी; दूसरे का अर्थ है ऐसे शिथिल स्नायु जिनमें हलचल या सक्रियता की शक्ति नहीं रह गई थी।

त्वरित सुझाव: पथ्य को केवल भोजन न लिखें, रोगानुकूल आहार लिखें; दूसरे पदबंध में कमजोरी के कारण गति-शक्ति का अभाव स्पष्ट करें।

11(क). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जाति-प्रथा के आधार पर श्रम-विभाजन समाज में किन समस्याओं का कारण रहा है ? आधुनिक समय में इस दिशा में क्या परिवर्तन हुआ है ? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- डॉ. आंबेडकर श्रम-विभाजन और जाति के आधार पर श्रमिकों के विभाजन में अंतर करते हैं। काम का बँटवारा तभी उपयोगी है जब वह व्यक्ति की योग्यता और इच्छा के अनुकूल हो।
- आधुनिक उद्योग में काम बदलते रहते हैं; इसलिए जीविका चुनने और आवश्यकतानुसार व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता जरूरी है।

चरण 1: जातिगत विभाजन की समस्याएँ समझिए जाति-प्रथा जन्म के आधार पर व्यक्ति का पेशा निर्धारित कर देती है। इसमें उसकी रुचि, योग्यता और प्रशिक्षण को उचित महत्त्व नहीं मिलता। यह श्रमिकों को ऊँच-नीच में भी बाँटती है और कुछ कामों के प्रति सामाजिक घृणा पैदा करती है। फलतः ऐसे व्यवसाय करने वालों में काम के प्रति अरुचि तथा उसे टालने की प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। व्यक्ति अपनी क्षमताओं का पूरा उपयोग नहीं कर पाता और समाज की आर्थिक दक्षता घटती है।

चरण 2: आधुनिक परिस्थितियों का परिवर्तन बताइए पाठ के अनुसार आधुनिक उद्योग और उत्पादन-प्रणाली में निरंतर परिवर्तन होने से

पुराने व्यवसाय बंद हो सकते हैं और नए काम पैदा हो सकते हैं। ऐसी स्थिति में व्यक्ति को व्यवसाय बदलना पड़ता है। जातिगत बंधन उसे दूसरा काम अपनाने से रोकें तो बेरोजगारी और भूख की समस्या उत्पन्न होती है। इस प्रकार आधुनिक समय ने श्रम-विभाजन को स्थिर रखने के बजाय परिवर्तनशील बना दिया है तथा पेशे की स्वतंत्रता को आवश्यक बना दिया है। इसे जाति-प्रथा पूरी तरह समाप्त हो जाने का दावा नहीं समझना चाहिए।

चरण 3: निष्कर्ष जाति पर आधारित श्रम-विभाजन असमानता, काम के प्रति अरुचि और बेरोजगारी का कारण बनता है। आधुनिक उद्योग की बदलती आवश्यकताएँ जन्म के बजाय योग्यता, रुचि और व्यवसाय बदलने की स्वतंत्रता पर बल देती हैं।

त्वरित सुझाव: उत्तर में पहले जन्म से तय पेशे की हानियाँ लिखिए, फिर बदलते उद्योगों के संदर्भ में व्यवसाय बदलने की आवश्यकता स्पष्ट कीजिए।

11(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'शिरीष का फूल संघर्ष-भरे जीवन में भी जीवन्त बने रहने की सीख देता है ।' उपयुक्त तर्क देकर प्रतिपादित कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- हजारीप्रसाद द्विवेदी शिरीष की प्रकृति में प्रतिकूल परिस्थितियों के बीच जीने की शक्ति देखते हैं। उसकी कोमलता दुर्बलता का प्रमाण नहीं है।
- शिरीष का अविचल और मस्त स्वभाव मनुष्य को संघर्ष में धैर्य, सरसता तथा अनासक्ति बनाए रखने की प्रेरणा देता है।

चरण 1: प्रतिकूल मौसम में शिरीष का व्यवहार देखिए भीषण गर्मी और लू में जब आसपास की वनस्पतियाँ झुलसती हैं, तब भी शिरीष अपने कोमल फूलों से लदा रहता है। वह कठिन वातावरण से पराजित होकर अपनी खिलने की क्षमता नहीं छोड़ता। उसके फूलों की कोमलता और वृक्ष की कठिन परिस्थितियों को सहने की शक्ति साथ-साथ दिखाई देती हैं। इससे सीख मिलती है कि जीवन की कठोरता के बीच भी मनुष्य अपनी संवेदनशीलता और सौंदर्यबोध बचाए रख सकता है।

चरण 2: मानव जीवन में इस सीख का अर्थ समझिए लेखक शिरीष को मस्त और फक्कड़ स्वभाव वाला मानते हैं। वह बाहरी ताप से विचलित हुए बिना अपना सहज जीवन जीता है। इसी प्रकार मनुष्य को दुःख, अभाव या संघर्ष आने पर निराश और कटु होने के बजाय सक्रिय रहना चाहिए। अनासक्ति का अर्थ जीवन से पलायन नहीं, बल्कि कठिनाइयों से घिरे रहते हुए भी मानसिक संतुलन और उल्लास बनाए रखना है। शिरीष की निरंतर पुष्पित अवस्था इस आंतरिक जीवन-शक्ति को प्रत्यक्ष करती है।

चरण 3: निष्कर्ष शिरीष कठिन मौसम में भी खिलकर सिखाता है कि संघर्ष के कारण जीवन की सरसता नहीं छोड़नी चाहिए। धैर्य, आत्मविश्वास और अनासक्त भाव से प्रतिकूल परिस्थितियों में भी जीवंत रहा जा सकता है।

त्वरित सुझाव: गर्मी और लू में खिलने का उदाहरण अवश्य दीजिए; फिर उसे मनुष्य के धैर्य, उल्लास और संवेदनशीलता से जोड़िए।

11(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'नमक' कहानी भारत-पाक के विस्थापित पुनर्वासित लोगों के दिलों को टटोलने वाली कहानी है – उदाहरणों के आधार पर पुष्टि कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- रज़िया सज्जाद ज़हीर की कहानी में देश-विभाजन से बदली सीमाएँ लोगों के जन्मस्थान से जुड़े लगाव को समाप्त नहीं कर पातीं।
- लाहौरी नमक स्मृति और आत्मीयता का प्रतीक है। पात्रों के व्यवहार से विस्थापन के बाद भी बचा हुआ मानवीय संबंध प्रकट होता है।

चरण 1: सिख बीबी के लगाव का उदाहरण दीजिए भारत में रहने वाली सिख बीबी लाहौर को भूली नहीं हैं। वहाँ की याद आने पर वे भावुक हो उठती हैं और सफिया से लाहौरी नमक लाने को कहती हैं। यह माँग किसी दुर्लभ या महँगी वस्तु की चाह नहीं है; वह छूटे हुए

घर, शहर और जीवन से फिर जुड़ने की इच्छा है। उनके लिए नमक में अपने पुराने वतन का स्वाद और स्मृतियाँ बसी हैं। सफिया उनके इस भाव को समझकर नमक पहुँचाने का प्रयत्न करती है।

चरण 2: दोनों ओर के अधिकारियों की संवेदना पहचानिए पाकिस्तान के कस्टम अधिकारी का दिल्ली से भावनात्मक लगाव है। सिख बीबी के लाहौर-प्रेम की बात सुनकर वह उनकी भावना को समझता है और नमक ले जाने में सहायता करता है। भारत की ओर का कस्टम अधिकारी ढाका की स्मृतियों से जुड़ा हुआ है और नमक की पोटली के पीछे छिपी आत्मीयता पहचानता है। अलग देशों में बस जाने पर भी इन पात्रों की स्मृति में उनका पुराना वतन जीवित है। एक-दूसरे का दुःख समझने की क्षमता राजनीतिक सीमाओं से अधिक मजबूत दिखाई देती है।

चरण 3: निष्कर्ष सिख बीबी का लाहौर, पाकिस्तानी अधिकारी का दिल्ली और भारतीय अधिकारी का ढाका से लगाव बताता है कि पुनर्वास के बाद भी विस्थापित लोगों का हृदय अपने पुराने घर में बसा रहता है। नमक इसी साझी स्मृति और मानवीय आत्मीयता को जोड़ता है।

त्वरित सुझाव: तीनों पात्रों और उनके स्मृति-स्थलों को सही मिलाइए: सिख बीबी–लाहौर, पाकिस्तानी अधिकारी–दिल्ली, भारतीय अधिकारी–ढाका।

11(घ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली के व्यक्तित्व को कैसे संपन्न बनाया ? स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- चार्ली चैप्लिन की कला का हास्य साधारण मनुष्य के संघर्ष और पीड़ा से जुड़ा है। उसमें करुणा और हँसी एक-दूसरे से अलग नहीं हैं।
- बचपन के अभावों तथा अपमान ने उन्हें वंचित मनुष्य की असुरक्षा और गरिमा पहचानने की संवेदनशील दृष्टि दी।

चरण 1: बचपन के संघर्ष का प्रभाव स्पष्ट कीजिए चार्ली का बचपन गरीबी, असुरक्षा और पारिवारिक कठिनाइयों में बीता। माँ की बीमारी और जीवन की अभावपूर्ण परिस्थितियों ने उन्हें दुःख और अपमान का अनुभव बहुत जल्दी करा दिया। इसलिए वे गरीब तथा असहाय लोगों की तकलीफ को केवल बाहर से नहीं देखते थे; उसका अनुभव उनके अपने जीवन का हिस्सा था। इस जद्दोजहद ने उनके भीतर मानवीय करुणा, परिस्थितियों को बारीकी से देखने की दृष्टि और कठिनाइयों में टिके रहने की शक्ति विकसित की।

चरण 2: इन अनुभवों का कलात्मक रूप समझिए चार्ली ने अपने दुःख को केवल निजी शिकायत नहीं बनने दिया। उन्होंने उसे ऐसे हास्य में बदला जिसमें साधारण आदमी ठोकर खाता है, अपमान सहता है और फिर भी जीने की कोशिश करता है। दर्शक उसकी बेढंगी हरकतों पर हँसते हुए उसके दुःख को भी अनुभव करता है। उनकी कला मनुष्य की कमजोरियों का उपहास मात्र नहीं करती, बल्कि उनमें अपने समान किसी व्यक्ति को पहचानने का अवसर देती है। अपने ऊपर हँस सकने की क्षमता ने उनके व्यक्तित्व में विनम्रता, आत्मदृष्टि और व्यापक मानवीयता जोड़ी।

चरण 3: निष्कर्ष जीवन की जद्दोजहद ने चार्ली को संवेदनशील, जुझारू और मानवीय कलाकार बनाया। अभाव और अपमान से प्राप्त अनुभव उनकी कला में करुणा से भरे हास्य के रूप में व्यक्त हुए, जिससे सामान्य दर्शक स्वयं को उनसे जोड़ सका।

त्वरित सुझाव: गरीबी और असुरक्षा का उल्लेख करके उनका परिणाम बताइए: संवेदना, संघर्षशीलता और करुणा से जुड़ा हास्य। केवल जीवन-वृत्त न लिखिए।

11(ङ). निम्नलिखित में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

जीजी ने इन्दर सेना पर पानी फेंके जाने को किस तरह सही ठहराया ? इस विषय में लेखक की प्रतिक्रिया को स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जीजी लोकविश्वास और त्याग की भावना के आधार पर इन्दर सेना को पानी देने का समर्थन करती हैं। लेखक इस प्रथा को पहले तर्क और पानी की कमी की दृष्टि से देखते हैं।
- प्रसंग में बीज बोने का उदाहरण थोड़ा देकर अधिक पाने की आशा समझाता है; लेखक की असहमति और जीजी के प्रति स्नेह साथ-साथ उपस्थित हैं।

चरण 1: जीजी के तर्क समझिए जीजी के अनुसार इन्दर सेना के बच्चे वर्षा के देवता इन्द्र के दूत हैं। उन्हें पानी देना इन्द्र को अर्घ्य देना है। वे समझाती हैं कि जिस वस्तु की कमी हो, उसी का दान वास्तविक त्याग है। किसान भी अच्छी फसल पाने के लिए पहले अपने पास का बीज धरती में डालता है। इसी तरह थोड़ा पानी देकर वर्षा के रूप में बहुत पानी पाने की आशा की जाती है। उनका तर्क लोकआस्था के साथ दान और सामूहिक कल्याण की भावना पर आधारित है।

चरण 2: लेखक की प्रतिक्रिया स्पष्ट कीजिए लेखक को आरंभ में यह व्यवहार व्यर्थ और अंधविश्वासपूर्ण लगता है। पानी की घोर कमी में बड़ी कठिनाई से जुटाया गया पानी बच्चों पर फेंकना उन्हें पानी की बरबादी लगता है। वे इन्दर सेना को ढोंग मानते हैं और जीजी से इस प्रथा का विरोध करते हैं। जीजी का स्नेह तथा बीज और त्याग वाला तर्क उन्हें तत्काल उत्तर देने से रोक देता है, पर वे पूरी तरह आश्वस्त नहीं हो जाते। उनके मन में तार्किक असहमति बनी रहती है; इस प्रसंग में उनकी संशयशील दृष्टि और जीजी की गहरी लोकआस्था का अंतर स्पष्ट होता है।

चरण 3: निष्कर्ष जीजी ने पानी फेंकने को इन्द्र के प्रति अर्पण, अभाव में किया गया सच्चा दान और बीज की तरह भविष्य की वर्षा का आधार माना। लेखक इसे पहले पानी की बरबादी मानते थे; जीजी के तर्क के बाद भी उनका संदेह पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ।

त्वरित सुझाव: उत्तर के दो भाग रखिए: जीजी का दान और बीज वाला तर्क, फिर लेखक का पानी की बरबादी संबंधी विरोध और बचा हुआ संशय।

12(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

कैसे कहा जा सकता है कि आत्मकथा का 'जूझ' शीर्षक, कथा-नायक की केन्द्रीय चारित्रिक विशेषता को उजागर करता है ? [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- शीर्षक की सार्थकता जाँचने के लिए उसके अर्थ को कथा के प्रमुख संघर्ष और नायक के स्वभाव से जोड़ना चाहिए।
- जूझ का अर्थ है प्रतिकूल परिस्थितियों से लगातार संघर्ष करना; आनंदा की शिक्षा पाने की लगन इसी संघर्ष का केंद्र है।

चरण 1: शिक्षा के लिए बाहरी संघर्ष पहचानिए आनंदा के पिता चाहते हैं कि वह खेती के काम में लगा रहे; उसकी पढ़ाई छूट जाती है। किंतु वह जीवन को केवल खेत की मजदूरी तक सीमित नहीं करना चाहता। वह माँ के साथ दत्ता जी राव का सहारा लेकर पिता को फिर विद्यालय भेजने के लिए तैयार करता है। पिता की शर्तों के कारण खेत और घर के काम भी करने पड़ते हैं, फिर भी वह पढ़ाई का अवसर नहीं छोड़ता। यह प्रसंग कठिनाइयों के सामने हार न मानने का प्रमाण है।

चरण 2: विद्यालय और अपने भीतर के संघर्ष समझिए विद्यालय लौटने पर आनंदा को पुराने कपड़ों तथा पिछड़ चुकी पढ़ाई के कारण संकोच और उपहास का सामना करना पड़ता है। वह मेहनत और अध्ययन के सहारे अपनी स्थिति सुधारता है। न. वा. सौंदलगेकर से प्रेरणा पाकर कविता को समझने और स्वयं रचना करने का अभ्यास करता है। खेत का काम करते समय भी कविता से उसका संबंध बना रहता है। इस प्रकार अभाव, झिझक और सीमित अवसरों से जूझते हुए वह अपनी रचनात्मक क्षमता विकसित करता है।

चरण 3: निष्कर्ष अत: जूझ शीर्षक कथा-नायक की संघर्षशीलता, लगन और आत्मविकास की इच्छा को व्यक्त करता है। शिक्षा तथा कविता के लिए निरंतर प्रयत्न करना उसके चरित्र की केंद्रीय विशेषता है।

त्वरित सुझाव: शीर्षक का अर्थ बताकर पिता के विरोध, पढ़ाई की कठिनाइयों और काव्य-साधना से उसके संबंध के उदाहरण दीजिए।

12(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

यशोधर बाबू समय के साथ ढल सकने में असफल क्यों रह जाते हैं ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- यशोधर बाबू का चरित्र पुरानी जीवन-दृष्टि और परिवार की नई आकांक्षाओं के बीच पीढ़ियों के अंतर को सामने लाता है।
- उनकी असहजता का कारण केवल आयु नहीं, बल्कि अपने पुराने आदर्शों को बदलती परिस्थितियों की एकमात्र कसौटी मानना भी है।

चरण 1: पुराने आदर्शों के प्रति आग्रह स्पष्ट कीजिए यशोधर बाबू का व्यक्तित्व किशनदा के प्रभाव में बना है। वे सादगी, मर्यादा, आत्मसंयम और पुराने सामाजिक संबंधों को महत्त्व देते हैं। नई परिस्थितियों में भी वे बार-बार उन्हीं आदर्शों से निर्णय करते हैं। अपने परिवार की नई पसंद को समझकर उससे संवाद करने के स्थान पर वे उसके प्रति शंका और असहमति अनुभव करते हैं। इस कारण घर में रहते हुए भी उनके और नई पीढ़ी के बीच मानसिक दूरी बढ़ती जाती है।

चरण 2: परिवार के व्यवहार से उदाहरण दीजिए बेटे भूषण की निजी कंपनी की नौकरी और उसकी अधिक आय उन्हें सहज विश्वास नहीं दिलाती; वे अपने अनुभव की नौकरी और जीवन-शैली से उसकी तुलना करते हैं। विवाह की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित आधुनिक ढंग की पार्टी भी उन्हें असंगत लगती है। पत्नी बच्चों की पसंद के साथ अधिक सहज हो जाती है, जबकि यशोधर बाबू स्वयं को अलग पाते हैं। ड्रेसिंग गाउन का उपहार मिलने पर भी उनका मन इस ओर जाता है कि कोई संतान उन्हें सुबह दूध लाने के श्रम से मुक्त करने की बात क्यों नहीं कहती।

चरण 3: निष्कर्ष इस प्रकार पुराने संस्कारों से गहरा लगाव, नए मूल्यों के प्रति अविश्वास और परिवार की बदलती भावनाओं से संवाद का अभाव उन्हें समय के साथ सहज रूप से ढलने नहीं देता।

त्वरित सुझाव: केवल उन्हें पुराने विचारों वाला न कहें; किशनदा का प्रभाव और वर्षगाँठ की पार्टी जैसे प्रसंगों से कारण स्पष्ट करें।

12(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

मुअनजो-दड़ो सिन्धु घाटी-सभ्यता का एक नियोजित शहर था । उदाहरणों के आधार पर टिप्पणी कीजिए । [3 अंक]

हल:

अवधारणा:

- नियोजित शहर में सड़कें, आवास, जलापूर्ति और निकास की व्यवस्था परस्पर जुड़ी हुई होती है।
- मुअनजो-दड़ो के अवशेष नगरवासियों की सुविधाओं तथा सार्वजनिक स्वच्छता को ध्यान में रखकर किए गए निर्माण का प्रमाण हैं।

चरण 1: सड़कों और आवासों की योजना पहचानिए मुअनजो-दड़ो की सड़कें सीधी हैं और एक-दूसरे को समकोण पर काटती हैं। इससे नगर के आवासीय खंड व्यवस्थित बनते हैं और आवागमन सुगम होता है। गलियों तथा घरों के विन्यास में भी योजना दिखाई देती है। घरों में आँगन, कमरे और स्नान की जगह जैसी सुविधाएँ मिलती हैं। पकी ईंटों का प्रयोग और भवनों का सुव्यवस्थित निर्माण बताते हैं कि बस्ती केवल आवश्यकता के अनुसार अनियमित रूप से बढ़ती हुई नहीं बनी थी।

चरण 2: पानी और सार्वजनिक व्यवस्था के उदाहरण दीजिए घरों और मोहल्लों में कुओं की उपलब्धता जलापूर्ति की विकसित व्यवस्था दिखाती है। घरों के स्नानघर तथा उनसे निकलने वाली नालियाँ बड़ी नालियों से जुड़ी थीं। ढकी हुई नालियों के कारण गंदे पानी का निकास व्यवस्थित था। विशाल सार्वजनिक स्नानागार में जल भरने, रोकने और बाहर निकालने की व्यवस्था भी तकनीकी समझ तथा सामूहिक सुविधा के प्रति सजगता का प्रमाण है। ये व्यवस्थाएँ आवास, पानी और सफाई को एक समग्र नगर-योजना से जोड़ती हैं।

चरण 3: निष्कर्ष अतः सीधी और समकोण पर मिलती सड़कें, व्यवस्थित आवास, कुएँ, स्नानागार तथा विकसित जल-निकास सिद्ध करते हैं कि मुअनजो-दड़ो सिंधु घाटी सभ्यता का सुविचारित ढंग से बसाया गया शहर था।

त्वरित सुझाव: नियोजित शहर के उत्तर में सड़क-योजना, आवास और जल-निकास के ठोस उदाहरण देकर हर उदाहरण का उपयोग भी स्पष्ट करें।

13(क). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

अपनी 'सिल्वर वेडिंग' के अवसर पर यशोधर बाबू के व्यवहार पर टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- वर्षगाँठ का प्रसंग यशोधर बाबू की पारंपरिक सोच और बच्चों की आधुनिक उत्सव-दृष्टि के अंतर को उजागर करता है।
- उनकी प्रतिक्रिया में बाहरी संकोच के साथ परिवार से आत्मीय देखभाल की अपेक्षा भी समझनी चाहिए।

चरण 1: उत्सव के प्रति असहजता बताइए अपनी शादी की पच्चीसवीं वर्षगाँठ पर बच्चों द्वारा आयोजित पार्टी यशोधर बाबू को सहज आनंद नहीं देती। वे इस प्रकार वर्षगाँठ मनाने के अभ्यस्त नहीं हैं। आधुनिक तौर-तरीकों और बच्चों के उत्साह के बीच वे संकोच तथा अलगाव अनुभव करते हैं। उनकी पत्नी परिवार के नए ढंग में अधिक सहज दिखाई देती है, जिससे उनका अकेलापन और उभरता है।

चरण 2: उपहार पर प्रतिक्रिया का अर्थ स्पष्ट कीजिए बेटे के दिए ड्रेसिंग गाउन से वे भावुक होते हैं। किंतु जब उसे सुबह दूध लाने जाते समय पहनने की बात आती है, तो वे सोचते हैं कि कोई बच्चा यह क्यों नहीं कहता कि अब वह स्वयं दूध ला दिया करेगा। उनके लिए महँगे उपहार से अधिक महत्त्व अपनत्व और दैनिक जिम्मेदारी बाँटने का है।

चरण 3: निष्कर्ष उनका व्यवहार संकोची और भावुक है। उत्सव के बाहरी प्रदर्शन से असहज यशोधर बाबू परिवार से वास्तविक स्नेह तथा देखभाल चाहते हैं।

त्वरित सुझाव: पार्टी में असहजता और ड्रेसिंग गाउन वाले प्रसंग को जोड़ें; इससे उनके व्यवहार के पीछे की भावनात्मक अपेक्षा स्पष्ट होगी।

13(ख). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

'डायरी के पन्ने' के आधार पर ऐन फ्रेंक के प्रकृति प्रेम पर सोदाहरण टिप्पणी कीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक के लिए प्रकृति सौंदर्य का स्रोत होने के साथ भय और बंधन में आशा देने वाली शक्ति भी है।
- प्रकृति-प्रेम के उत्तर में दिखाई देने वाला प्राकृतिक दृश्य और उससे मिलने वाली मानसिक राहत, दोनों स्पष्ट होने चाहिए।

चरण 1: प्राकृतिक दृश्यों से उसका लगाव बताइए छिपकर रहने के कारण ऐन खुले वातावरण में स्वतंत्र रूप से नहीं जा सकती, फिर भी उसका ध्यान आकाश, पेड़ों और पक्षियों की ओर जाता है। वह नीले आकाश, चेस्टनट के पेड़ और उड़ते पक्षियों को देखकर आनंद अनुभव करती है। सीमित स्थान से दिखाई देने वाला यह संसार उसके लिए बाहरी जीवन और स्वतंत्रता का अनुभव बन जाता है।

चरण 2: प्रकृति से मिलने वाले संबल को समझिए ऐन के लिए धूप, खुला आकाश और प्रकृति की सुंदरता मन की उदासी दूर करने वाले साधन हैं। भय तथा अकेलेपन के बीच भी प्रकृति उसे यह अनुभव कराती है कि संसार में सुंदरता अभी बनी हुई है। इसलिए वह प्रकृति के सान्निध्य को दुख और निराशा से राहत पाने का उपाय मानती है।

चरण 3: निष्कर्ष ऐन का प्रकृति-प्रेम उसकी संवेदनशीलता तथा जीवन के प्रति आस्था का परिचायक है। आकाश, पेड़ और पक्षी उसे बंधन में भी प्रसन्नता और आशा देते हैं।

त्वरित सुझाव: केवल प्रकृति सुंदर लगने की बात न लिखें; किसी प्राकृतिक दृश्य को ऐन की स्वतंत्रता, आशा और मानसिक राहत से जोड़ें।

13(ग). निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

क्या सिंधु-घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कहा जा सकता है ? पक्ष या विपक्ष में दो तर्क दीजिए । [2 अंक]

हल:

अवधारणा:

- जल-संस्कृति से आशय ऐसे जीवन से है जिसमें जलापूर्ति, स्नान, स्वच्छता और निकास को विशेष महत्त्व दिया जाता है।
- सिंधु सभ्यता के भौतिक अवशेषों के आधार पर पक्ष में तर्क दिए जा सकते हैं; केवल नदी के किनारे बसना पर्याप्त प्रमाण नहीं है।

चरण 1: पहला तर्क: जलापूर्ति और दैनिक जीवन मुअनजो-दड़ो में बड़ी संख्या में कुएँ तथा घरों में स्नान की सुविधाएँ मिलती हैं। इससे पता चलता है कि पानी की उपलब्धता और व्यक्तिगत स्वच्छता दैनिक जीवन की व्यवस्थित जरूरतें थीं। जल का उपयोग केवल खेती अथवा पीने तक सीमित नहीं था; आवासीय योजना में भी उसका महत्त्व था।

चरण 2: दूसरा तर्क: सार्वजनिक स्नान और निकास विशाल सार्वजनिक स्नानागार तथा जल को भरने और निकालने की व्यवस्था सामूहिक जीवन में पानी के महत्त्व को दिखाती है। घरों से जुड़ी ढकी नालियाँ गंदे पानी को व्यवस्थित रूप से बाहर ले जाती थीं। इस प्रकार जल-संग्रह, स्नान और जल-निकास की विकसित व्यवस्था उनकी नगर-संस्कृति का प्रमुख अंग थी।

चरण 3: निष्कर्ष हाँ, इन प्रमाणों के आधार पर सिंधु-घाटी सभ्यता को जल-संस्कृति कहना उचित है। दैनिक जल-सुविधाएँ और सामूहिक स्नान-निकास की योजना इसके दो ठोस आधार हैं।

त्वरित सुझाव: दो अलग तर्क बनाइए: पहले कुओं और घरेलू स्नान-सुविधाओं पर, फिर सार्वजनिक स्नानागार तथा जल-निकास पर उदाहरण दीजिए।

14. "जूझ' कहानी उभरते किशोर-समाज को प्रेरणा देने वाली एक सफल कहानी है' – इस कथन के आलोक में 'जूझ' कहानी के उन जीवन-मूल्यों की विवेचना कीजिए जो किशोर-किशोरियों के लिए प्रेरक हैं । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- आनंद यादव की आत्मकथात्मक रचना 'जूझ' में शिक्षा पाने और अपनी प्रतिभा विकसित करने के लिए एक किशोर का संघर्ष प्रस्तुत हुआ है। जीवन-मूल्यों की विवेचना करते समय प्रत्येक मूल्य को उसके व्यवहार और अनुभव से जोड़ना चाहिए।
- कथा में दृढ़ संकल्प, परिश्रम, आत्मविश्वास, शिक्षा के प्रति लगन तथा शिक्षक के मार्गदर्शन से सृजनात्मकता का विकास किशोरों के लिए प्रेरक बनता है।

चरण 1: शिक्षा की लगन और दृढ़ संकल्प पहचानिए कथानायक पढ़ना चाहता है, किंतु पिता उसे खेती के काम में लगाए रखना चाहते हैं। प्रतिकूल पारिवारिक परिस्थितियाँ उसके विद्यालय जाने में बाधा बनती हैं। फिर भी वह शिक्षा की इच्छा छोड़ नहीं देता। माँ का सहयोग और दत्ता जी राव का हस्तक्षेप उसके लिए दोबारा पढ़ाई का रास्ता खोलते हैं। यह प्रसंग सिखाता है कि कठिनाई आने पर लक्ष्य त्यागने के बजाय उचित सहायता लेकर उसे पाने का प्रयास करना चाहिए। उसकी शिक्षा के प्रति लगन किशोरों को अपने भविष्य के लिए सजग और संकल्पवान बनाती है।

चरण 2: परिश्रम और आत्मविश्वास का महत्त्व समझाइए विद्यालय जाने की अनुमति मिलने पर भी खेत का काम समाप्त नहीं होता। उसे खेती की जिम्मेदारियों के साथ पढ़ाई करनी पड़ती है। इस दोहरे श्रम के बावजूद वह सीखने की इच्छा बनाए रखता है। विद्यालय में प्रारंभिक संकोच और असुविधा भी उसके विकास को रोक नहीं पाते। वह अपने अध्ययन में आगे बढ़ने का प्रयास करता है। इससे परिश्रम, धैर्य और आत्मविश्वास का मूल्य सामने आता है। किशोर-किशोरियाँ सीख सकते हैं कि कठिन परिस्थितियाँ या आरंभिक पिछड़ापन उनकी क्षमता का अंतिम निर्णय नहीं हैं; नियमित प्रयास से वे आगे बढ़ सकते हैं।

चरण 3: मार्गदर्शन और सृजनशीलता से प्रेरणा लीजिए सौंदलगेकर मास्टर के भावपूर्ण कविता-पाठ से कथानायक की कविता में रुचि जागती है। वह कविताओं को गुनगुनाता है और स्वयं कविता बनाने का प्रयास करता है। खेत में काम करते हुए भी उसकी कल्पना सक्रिय रहती है। शिक्षक का प्रोत्साहन उसकी छिपी प्रतिभा को विकसित करता है। यह प्रसंग अच्छे मार्गदर्शन को स्वीकार करने, अभ्यास करते

रहने और अपनी अभिरुचि पहचानने का संदेश देता है। कथा यह भी दिखाती है कि श्रमपूर्ण ग्रामीण जीवन में रहने वाला किशोर साहित्यिक सृजन की ओर बढ़ सकता है। प्रतिभा के विकास में सामाजिक प्रतिष्ठा से अधिक लगन और अभ्यास का योगदान है।

चरण 4: निष्कर्ष 'जूझ' किशोरों को परिस्थितियों से हार मानने के बजाय शिक्षा, परिश्रम, संकल्प और रचनात्मक प्रयास के सहारे आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। कथानायक का संघर्ष और शिक्षकों का सहयोग इन मूल्यों को वास्तविक अनुभवों से प्रमाणित करते हैं; इसलिए यह उभरते किशोर-समाज के लिए प्रेरक रचना है।

त्वरित सुझाव: केवल जीवन-मूल्यों की सूची न दें; शिक्षा के लिए संघर्ष, खेती के साथ पढ़ाई और कविता में रुचि के प्रसंगों को क्रमशः संकल्प, परिश्रम तथा सृजनशीलता से जोड़ें।

अथवा

14. 'ऐन फ्रेंक की डायरी इतिहास के दर्दनाक अध्याय के अनुभवों की कहानी है' – इस कथन के आलोक में उन जीवन-मूल्यों का उल्लेख कीजिए जो द्वितीय विश्व युद्ध में छिन्न-भिन्न हो गए थे । [5 अंक]

हल:

अवधारणा:

- ऐन फ्रेंक की डायरी नात्सी उत्पीड़न और द्वितीय विश्व युद्ध के बीच एक यहूदी किशोरी के भय, इच्छाओं और अनुभवों का संवेदनशील दस्तावेज़ है। उसके निजी जीवन की पीड़ा व्यापक मानवीय संकट को सामने लाती है।
- प्रश्न में युद्ध से नष्ट हुए जीवन-मूल्य बताने हैं; इसलिए शांति, समानता, स्वतंत्रता, करुणा और सुरक्षित बचपन को डायरी में वर्णित परिस्थितियों के साथ जोड़ना आवश्यक है।

चरण 1: शांति और जीवन की सुरक्षा का विघटन समझाइए युद्ध ने सामान्य नागरिकों के जीवन से शांति और सुरक्षा छीन ली। ऐन और उसके साथ छिपे लोगों को लगातार पकड़े जाने का भय रहता था। बाहर की हिंसा और उत्पीड़न की खबरें उनकी आशंकाएँ बढ़ाती थीं। जीवन बचाने के लिए छिपना, आवाज़ों और गतिविधियों पर नियंत्रण रखना तथा भविष्य के प्रति अनिश्चित रहना उनकी दिनचर्या बन गया था। मनुष्य का निर्भय होकर जीना एक मूल मानवीय आवश्यकता है, लेकिन युद्ध ने इसी आधार को नष्ट किया। डायरी का दर्द केवल एक परिवार की परेशानी नहीं, असंख्य निर्दोष लोगों की असुरक्षा का संकेत है।

चरण 2: समानता, स्वतंत्रता और मानव गरिमा पर प्रहार पहचानिए यहूदियों को केवल उनकी जातीय और धार्मिक पहचान के कारण उत्पीड़न का शिकार बनाया गया। इससे मनुष्य की समानता, धार्मिक सहिष्णुता और मानव गरिमा का उल्लंघन हुआ। ऐन जैसे बच्चों तक का स्वाभाविक जीवन बाधित हो गया। अपनी इच्छा से बाहर निकलना, पढ़ना, मित्रों से मिलना और खुले वातावरण में रहना उनके लिए सहज नहीं रहा। ऐसी परिस्थिति बताती है कि शासन में घृणा और भेदभाव बढ़ने पर स्वतंत्रता और न्याय कैसे समाप्त हो जाते हैं। किसी समुदाय को मनुष्य होने के अधिकारों से वंचित करना सभ्यता के मूल आदर्शों का पतन है।

चरण 3: करुणा, पारिवारिक सुख और बचपन की क्षति स्पष्ट कीजिए निर्दोष लोगों की गिरफ्तारी, परिवारों का बिखरना और हिंसा मनुष्यता तथा करुणा के टूटने के उदाहरण हैं। ऐन की डायरी में एक किशोरी की समझे जाने, स्नेह पाने और अपनी क्षमताएँ विकसित करने की आकांक्षा है, किंतु भय और बंद जीवन उसकी सहज इच्छाओं को दबाते हैं। सुरक्षित बचपन, आत्मीय संबंध और भविष्य के सपनों का विकास युद्ध की भेंट चढ़ता है। फिर भी छिपे लोगों की सहायता करने वालों का साहस और ऐन की लिखने की आकांक्षा बताते हैं कि मानवीय मूल्य पूरी तरह मिटे नहीं थे। उनका शेष रहना युद्ध की अमानवीयता को और अधिक स्पष्ट करता है।

चरण 4: निष्कर्ष ऐन फ्रेंक की डायरी इतिहास के दर्दनाक अध्याय की सजीव गवाही है। इसमें युद्ध और नात्सी उत्पीड़न से शांति, समानता, स्वतंत्रता, करुणा, मानवीय गरिमा तथा सुरक्षित बचपन के छिन्न-भिन्न होने की पीड़ा दिखाई देती है। यह अनुभव मनुष्य के प्रति संवेदना और भेदभावरहित समाज की आवश्यकता का बोध कराता है।

त्वरित सुझाव: उत्तर में युद्ध का सामान्य वर्णन करने के बजाय प्रत्येक मूल्य के साथ डायरी का संदर्भ जोड़ें: छिपकर रहना और असुरक्षा, यहूदी उत्पीड़न और असमानता, बाधित किशोर जीवन और खोया बचपन।